ऐसा क्यों है–3

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Aisa Kyon Hai-3 (Why Is It So-3)
Cover Page picture : A Boy Thinking of Why
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

ऐसा क्यों है–3 5

1 समुद्र खारा क्यों–1 7

2 समुद्र खारा क्यों–2 17

3 समुद्र क्यों कराहता है 29

4 दादी मकड़ी 46

5 सूरज और चॉद आसमान में क्यों रहते हैं 53

6 चॉद क्यों घटता बढ़ता है 57

7 बोर्नियो में चीते क्यों नहीं 60

8 चीते के शरीर पर धारियॉ कैसे–1 66

9 चीते के शरीर पर धारिया कैसे–2 71

10 चीते को पंजे कैसे मिले 80

11 टोड की खाल खुरदरी कैसे हुई 83

12 पेड़ों की पत्तियॉ क्यों गिरती हैं 89

13 कीड़े धरती के नीचे ही क्यों रहते हैं 95

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

ऐसा क्यों है–3

बच्चों क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि जैसी दुनियॉ आज हम देखते वैसी ही वह दुनियॉ क्यों है। हमें विश्वास है कि तुम ऐसा अवश्य ही सोचते होगे। जैसे मधुमक्खी केवल ज़ ज़ ज़ ज़ ही क्यों करती है या फिर सूरज ओर चॉद आसमान मे ही क्यों रहते हैं या फिर मछली क्यों नहीं बोल सकती आदि आदि। ऐसे सवाल दिमाग में आने स्वाभाविक हैं। ऐसी कथाऐं दुनियॉ बनने के समय की ज़्यादा मिलती हैं।

यहॉ कुछ ऐसी लोक कथाऐं दी जा रही हैं जो ऐसे मुश्किल सवालों का जवाब देने की कोशिश करती हैं। अलग अलग देशों में इन बातों के बारे में लोगों के अलग अलग विचार हैं अलग अलग विश्वास हैं। ये सब कथाऐं दुनियॉ के कई देशों से ली गयी हैं। ये कथाऐं इतनी सारी हैं कि हम इनको तीन संग्रहों में प्रकाशित कर रहे हैं। ऐसी लोक कथाओं का पहला और दूसरा संग्रह प्रकाशित हो चुका है[1] जिनमें हमने ए से जी तक की और ऐच से आर[2] तक की चीज़ों को लिया था।

अब प्रस्तुत है उसका तीसरा संग्रह। इसमें हमने ऐस से ज़ी तक की चीज़ें ली हैं।[3] तो लो तुम भी पढ़ो ये लोक कथाऐं और इन्हें सुना कर चकित करो अपने दोस्तों को। ये तुम्हारी उत्सुकता को भी शान्त करेंगी और तुमको तुम्हारे दोस्तों में भी लोकप्रिय बनायेंगी।

ये इतनी सारी कहानियॉ हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से ख़ास तौर पर इकट्ठी की हैं। हमें पूरी आशा है कि ये कथाऐं तुम्हारे ज्ञान को बढ़ाने में कुछ सहायता अवश्य ही करेंगी।

---

[1] "Aisa Kyon Hai-1" and "Aisa Kyon Hai-2" both by Sushma Gupta published in Hindi language.

[2] From A to G = Bat, Bear, Bee, Beetle, Vuffalo, Cat, Clouds, Crab, Deer, Dog, Earthworm, Ega Bird, Elephant, Fish, Flies, Fox, Gertrude Bird

From H to R = Hawk, Hedgehog, Hippopotamus, Lightening, Monkey, Opposum, Owl, Pigeon, Praying Mantis, Rabbit, Rice, Rooster

[3] From S to Z = Sea, Spider, Sun/Moon, Tiger, Toad, Tree, Worms

1 समुद्र खारा क्यों–1[4]

बच्चों क्या तुमने कभी समुद्र देखा है? हमें यकीन है कि तुममें से बहुतों ने समुद्र को केवल किताबों में ही पढ़ा होगा और या फिर उसको केवल फिल्मों में ही देखा होगा।

क्या तुम्हें यह भी मालूम है कि समुद्र में कितना सारा पानी होते हुए भी हम उसे पी नहीं सकते? क्यों? क्योंकि उसका पानी नमकीन होता है। और नमक का पानी भला कोई कैसे पी सकता है।

समुद्र में तो बहुत पानी है फिर उसका इतना सारा पानी खारी भी कैसे हुआ। उसको खारा होने के लिये तो बहुत सारे नमक की जरूरत है। इतना सारा नमक कहाँ से आया?

समुद्र का इतना सारा पानी खारा कैसे हुआ एशिया महाद्वीप के चीन देश यह दन्त कथा हमको यही बताती है।

यह हजारों साल पुरानी बात है कि चीन में पूर्वीय समुद्र[5] के किनारे दो भाई रहा करते थे। बड़े भाई का नाम आह बौंग था और वह बहुत ही आलसी था।

छोटे भाई का नाम आह डौंग[6] था पर वह बहुत ही मेहनती दयावान और ज़िन्दगी को आसानी से लेने वाला आदमी था।

---

[4] Why the Sea is Salty – a myth from China, Asia. Adapted from the book "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. Its English version may be read at https://www.scribd.com/doc/57934877/Chinese-Myths-and-Legends

[5] Eastern Sea

[6] Ah Bong and Ah Dong – names of the two Chinese brothers

आह बौंग तो अपना दिन बिस्तर में लेट कर गुजारता था जब कि आह डौंग अपनी जमीन पर काम करता था और शाम को शाम का खाना बनाने के लिये घर लौट कर आ जाता था।

एक दिन सुबह सवेरे आह डौंग दोपहर के खाने के लिये अपने चावल ले कर पास की एक पहाड़ी पर लकड़ी काटने के लिये गया। जैसे ही वह अपनी कुल्हाड़ी पहली बार एक पेड़ में मारने ही वाला था कि उस पेड़ के पीछे से एक बूढ़ा बौना निकल पड़ा।

आह डौंग ने अपनी कुल्हाड़ी नीचे कर ली और उस बौने की तरफ बढ़ा कि शायद वह उसकी कुछ सहायता कर सके। उस बूढ़े बौने ने आह डौंग का हाथ अपने हाथ में लिया और प्रार्थना भरी निगाहों से उसको देखता हुआ बोला — "मैंने कई दिनों से खाना नहीं खाया है। क्या तुम मुझे थोड़ा सा खाना दोगे?"

आह डौंग के लिये यह बहुत मुश्किल काम था कि वह उस भूखे बूढ़े बौने को खाने के लिये मना कर देता क्योंकि उस बौने को तो देखने से ही लग रहा था कि वह शायद एक महीने से न तो नहाया है और न ही उसने कुछ खाया है।

आह डौंग ने तुरन्त ही अपने बन्दगोभी के पत्ते खोले जिसमें उसके चावल लिपटे थे। उसने उनको दो हिस्सों में बॉटा और उसमें से एक हिस्सा उस बौने को दे दिया। बौने ने तुरन्त ही उन चावलों

को अपनी छोटी छोटी उँगलियों में पकड़ लिया और जितनी जल्दी उन्हें खा सकता था खा लिया।

अभी उसने अपना पूरा चावल खत्म भी नहीं किया था और उसके मुँह में भी अभी चावल भरा ही था कि उसने अपनी उँगलियाँ चाटीं और आह डौंग से उसका बचा हुआ चावल और माँगा।

आह डौंग थोड़ा हिचकिचाया क्योंकि यह बचा हुआ चावल उसके दोपहर के खाने के लिये था जो उसको शाम तक काम करने के लिये ठीक रखता पर वह बौना इतना बूढ़ा और दया के लायक था कि वह उसको मना नहीं कर सका और उसने अपना वह बचा हुआ खाना भी उसको दे दिया।

उस बौने ने उसका दिया यह खाना भी उतनी ही जल्दी खा लिया जितना पहले वाला खाना खाया था और खुशी से एक पेड़ के सहारे बैठ गया।

वह बोला — "तुम एक बहुत ही अच्छे आदमी हो। मैं जानता हूँ कि बहुत कम लोग ऐसे होते है जो अपना आखिरी कौर भी किसी अजनबी को खाने के लिये दे देते हैं। अपनी इस दया के बदले में तुम मेरी एक भेंट स्वीकार करो।"

कह कर उस बौने ने एक बहुत ही पुराना पत्थर का बक्सा निकाला और उसका ढक्कन खोला। उस बक्से में से उसने एक बहुत ही ऊबड़ खाबड़ बनी हुई पत्थर की एक चक्की निकाली और आह डौंग को दे कर बोला।

"लो यह लो। यह एक बहुत ही बढ़िया पीसने वाला पत्थर है। बस तुमको इसको केवल पीसने के लिये कहना है और यह तुमको वह हर चीज़ दे देगा जो भी तुम चाहोगे।

और जब तुमको इसको रोकना हो बस तुमको यह कहना है "चक्की चक्की, तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।" और फिर यह चक्की तुरन्त ही अपने आप रुक जायेगी।"

आह डौंग ने उसकी यह इतनी बढ़िया भेंट स्वीकार कर ली और उसको इसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया। हालॉकि उस चक्की की ताकत को बारे में उसके मन में कुछ शक था फिर भी... ।

उसके बाद उस बौने ने बहुत नीचे तक झुक कर आह डौंग का धन्यवाद किया और उसको वहीं छोड़ कर चला गया।

आह डौंग ने वह बक्सा वहीं पास में उगी घास पर रख दिया और अपनी लकड़ी काटने में लग गया। दोपहर तक उसको भूख लग आयी थी सो उसने उस चक्की को जॉचने का निश्चय किया।

उस चक्की को उसने बड़ी सावधानी से अपने हाथ में पकड़ा और जैसे उस बौने ने उसको कहने के लिये बताया था कहा — "चक्की चक्की मुझे थोड़ा चावल दो।"

उसके कहने की देर थी कि वह चक्की हिली और उसने पके हुए चावल के छोटे छोटे ढेर लगाने शुरू कर दिये। डौंग ने उस

चक्की को रुकने के लिये कहा पर चक्की ने सुना नहीं और वह चावल के ढेर पर ढेर निकाल कर जमीन पर लगाती रही।

बाद में उसको उस चक्की रोकने का ठीक वाक्य याद आया और वह बोला — "चक्की चक्की तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।" तब कहीं जा कर वह चक्की रुकी। आह डौंग ने उस चक्की को फिर से बहुत सँभाल कर उसी बक्से में रख दिया।

जितना चावल उस चक्की ने बना कर उसको दिया था उसमें से एक ढेर को छोड़ कर बाकी सब चावल उसने अपने एक तिनकों से बने थैले में रख लिये।

उन चावलों में से बहुत अच्छी खुशबू आ रही थी और ऐसे बढ़िया चावल तो उसने पहले कभी खाये ही नहीं थे। वे बहुत ही बढ़िया उबले हुए थे और उसमें फल, मूँगफली और मिर्च पड़ी हुई थीं। उन चावलों का एक ढेर उसको शाम तक के लिये काम करने के लिये ताकत देने के लिये काफी था। शाम को वह चावल, चक्की, कुल्हाड़ी और लकड़ी ले कर घर वापस लौट आया।

जब आह डौंग शाम को घर वापस लौटा तो आह बौंग तभी जागा था और रसोईघर में कुछ खाने के लिये ढूँढ रहा था। जैसे ही आह डौंग घर में घुसा तो उसको उस बढ़िया चावल की खुशबू आयी।

बिना कुछ कहे सुने उसने अपने छोटे भाई से उसका वह तिनकों का थैला छीन लिया जिसमें उसके चक्की से निकले हुए चावल रखे

हुए थे और उनको खाने लगा। वह उन चावलों को तब तक खाता रहा जब तक वह उनका दूसरा दाना नहीं खा सका।

जब आह बौंग खाना खा रहा था तो आह डौंग ने उसको उस बौने और उसकी दी हुई चक्की के बारे में बताया। और जब आह डौंग अपने बड़े भाई को चक्की के बारे में बता रहा था तो आह बौंग ने वह चक्की निकाली और उसको ले कर रसोईघर में भागा और उसको शाम का खाना बनाने के लिये कहा।

उस चक्की ने उसका हुकुम मान कर बढ़िया स्वादिष्ट खाने की प्लेटों पर प्लेटें निकालनी शुरू कर दीं। जब आह बौंग उन खाने की प्लेटों से सन्तुष्ट हो गया तो उसने चक्की को रुक जाने के लिये कहा पर उसने उससे नम्रता से नहीं कहा सो वह चक्की खाने की प्लेटों पर प्लेटें निकालती ही रही।

आह बौंग यह देख कर परेशान हो गया तभी उसका भाई रसोईघर में घुसा और बौने का सिखाया हुआ वाक्य बोल कर उस चक्की को खाना की प्लेटों को निकालने से रोका।

सारे खाना खाने के समय आह बौंग अपने भाई को तरकीबें सुझाता रहा कि वे उस चक्की को किस तरह अक्लमन्दी से इस्तेमाल कर सकते थे पर आह डौंग ने जब तक अपना खाना खत्म नहीं कर लिया वह नहीं बोला।

खाना खा कर आह डौंग बोला — "हमको इस चक्की के बारे में सावधानी बरतने की जरूरत ही क्या है यह तो हमको सभी कुछ देने वाली है।"

आह बौंग बोला — "मुझे मालूम है। पर हम इससे और भी तो पैसा कमा सकते हैं। चलो हम इसको एक गाड़ी भर कर नमक देने के लिये कहते हैं। किसको पता कि नमक बेच बेच कर ही हम लोग चीन के सबसे अमीर आदमी बन जायें।"

आह डौंग बोला — "हम इस बारे में कल सुबह बात करेंगे अब रात हो गयी है चलो चल कर सोते हैं।" और वह रात को सोने के लिये अपने भूसों के गद्दे बिछाने के लिये चला गया।

जब आह डौंग चला गया तब भी आह बौंग उस चक्की से अमीर बनने की तरकीबें सोचता रहा। उसने सोचा कि जब वह अमीर बन जायेगा तो वह अपनी दौलत अपने भाई को बिल्कुल भी नहीं देगा।

आह बौंग ने अपना सामान भी बॉधने की कोशिश नहीं की। बस उसने वह चक्की अपनी बगल में दबायी और महीनों में पहली बार वह घर छोड़ कर निकल पड़ा।

दौड़ा दौड़ा वह बन्दरगाह पर पहुॅचा जहॉ एक सौदागर का जहाज़ दक्षिण चीन की तरफ जा रहा था। वह वहॉ से वह एक ऐसी गुप्त और दूर जगह चले जाना चाहता था जहॉ उसका भाई

उस तक पहुँच ही न सके। जहाँ वह अपनी सारी उम्र एक अमीर और इज़्ज़तदार आदमी बन कर गुजार सके।

वह उस जहाज़ पर चढ़ गया। जहाज़ का लंगर उठा लिया गया और जहाज़ खुले समुद्र की तरफ चल दिया। आह बौंग ने उस चक्की को जहाज़ के एक कोने में रख दिया और उससे कहा कि वह नमक देना शुरू करे।

उस चक्की ने उसका हुकुम मान कर नमक देना शुरू कर दिया और आह बौंग ने उस नमक को थैलों में भरना शुरू कर दिया। पर आह बौंग के नमक को थैले में भरने की रफ्तार चक्की के नमक बनाने की रफ्तार से बहुत कम थी।

वह चक्की बहुत ही जल्दी जल्दी नमक बना रही थी सो वह नमक पहले आह बौंग के पैरों पर, फिर जहाज़ के फर्श पर, फिर जहाज़ के डैक पर इकट्ठा होना शुरू हो गया।

यह देख कर आह बौंग को डर लगा कि लोगों को कहीं उसके इस भेद का पता न लग जाये कि इतना सारा नमक कहाँ से आ रहा था सो उसने चक्की को रुकने के लिये कहा पर चक्की तो रुकी नहीं। उसने उसको फिर रुक जाने के लिये कहा पर वह तो फिर भी नहीं रुकी।

वह तो बस नमक निकाले जा रही थी निकाले जा रही थी रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। अब नमक इतना सारा हो गया था कि वह चक्की तो खुद भी उसमें ढक जाने वाली थी।

असल में आह बौंग उसको "धन्यवाद" और "मेहरबानी कर के" जैसे शब्द कहना भूल गया था और चक्की इन शब्दों को सुने बिना रुकने वाली नहीं थी।

नमक का ढेर बढ़ता ही जा रहा था। आह बौंग उस चक्की को बार बार रोकने की कोशिश करता रहा पर क्योंकि वह उसको रोकने के असली शब्दों को नहीं कह पा रहा था इसलिये वह चक्की भी रुक नहीं पा रही थी।

नमक का ढेर बढ़ता ही जा रहा था। अब तो उससे वह चक्की भी ढक गयी थी पर फिर भी वह चक्की नमक निकाले जा रही थी।

अब तक जहाज़ चलाने वाले लोगों को भी इस बात का पता चल गया था कि उनके जहाज़ पर नमक बड़ी तेज़ी से बन रहा था सो वे जहाज़ को उससे डूबने से बचाने के लिये उसको समुद्र में फेंकने में लग गये थे।

पर चक्की के नमक बनाने और उनके नमक को समुद्र में फेंकने की रफ्तार का भी कोई मुकाबला नहीं था। चक्की के नमक बनाने की रफ्तार बहुत तेज़ थी।

जहाज़ के लोग घबरा गये। उनमें से कुछ अपनी जान बचाने के लिये समुद्र में कूद गये। बाद में जहाज़ चलाने वालों ने भी यही सोचा और उन्होंने भी वह जहाज़ छोड़ दिया।

अब केवल आह बौंग ही उस जहाज़ पर रह गया था। वह अपनी उस कीमती चीज़ का साथ छोड़ने को तैयार नहीं था। और चक्की अभी भी नमक बनाये जा रही थी।

नमक अब आह बौंग की गरदन तक पहुँच रहा था। अब किसी भी समय जहाज़ डूब सकता था। बस देखते ही देखते समुद्र की एक ज़ोर की लहर आयी और 10 मिनट के अन्दर अन्दर वह पूरा जहाज़ समुद्र में डूब गया।

आह बौंग और वह चक्की भी उस जहाज़ के साथ साथ समुद्र में डूब गये पर उस चक्की ने नमक बनाना नहीं छोड़ा क्योंकि जब तक उसको कोई रुकने के लिये कहेगा नहीं तब तक वह रुकेगी नहीं। और उसको रुकने के लिये कहता कौन?

वह चक्की आज भी उस पूर्वीय समुद्र के अन्दर पड़ी पड़ी नमक बना रही है और उसको रोकने वाला कोई नहीं है इसी लिये आज सारे समुद्र का पानी खारा है और शायद खारा ही रहेगा जब तक कि उस चक्की को कोई नमक बनाने से न रोके। और उसे रोकेगा कौन?

2 समुद्र खारा क्यों–2[7]

समुद्र के पानी के खारा होने की यह दूसरी कहानी। यह एक लोक कथा है जो यूरोप महाद्वीप के नौर्स देशों[8] की लोक कथाओं से ली गयी है। इनकी लोक कथा भी चीन की दन्त कथा से काफी कुछ मिलती जुलती है।

तो लो पढ़ो यह कथा नौर्स देशों में कही सुनी जाने वाली कि वहॉ के लोग इस बारे में क्या कहते हैं।

एक बार की बात है कि बहुत बहुत बहुत दिन पहले वहॉ दो भाई रहा करते थे। उनमें से बड़ा भाई अमीर था और छोटा भाई गरीब था।

एक बार एक किसमस की शाम[9] को गरीब भाई के पास खाने के लिये कुछ ज़्यादा नहीं था। न तो मॉस ही था और न ही रोटी थी सो वह अपने अमीर भाई के पास गया और भगवान के नाम पर खाने के लिये उससे कुछ मॉगा ताकि वह किसमस मना सके।

---

[7] Why the Sea is Salt – a folktale from Norse Countries, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn12.htm
Taken from "Popular Tales from the Norse". By George Webbe Dasent. 1904.

[8] Norse countries are loated in the far North of Europe continent. They are five in number ab=nd their names are – Iceland, Sweden, Norway, Finland and Denmark.

[9] Translated for the words "Christmas Eve" – it is the evening of 24th December.

अब यह कोई पहला मौका तो था नहीं जब उसका भाई उसकी सहायता करने पर मजबूर हुआ था पर तुम यह भी सोच सकते हो कि वह उसको देख कर खुश नहीं हुआ।

फिर भी वह बोला — "अगर जो कुछ मैं कहूँ तुम वही करोगे तो मैं तुमको काफी सारा सूअर का मॉस[10] दे दूँगा।"

सो वह गरीब भाई बेचारा बोला कि वह उसके लिये वह सब कुछ करने के लिये तैयार था जो भी वह कहेगा और इस बात के लिये उसने उसको बहुत धन्यवाद भी दिया।

अमीर भाई बोला — "तो लो यह लो सूअर का मॉस और बस अब तुम नरक चले जाओ।"

गरीब भाई कुछ दुखी हो कर बोला — "अब क्योंकि मैंने वही करने का वायदा किया है कि जो तुम कहोगे इसलिये मैं वही करूँगा जो तुमने मुझसे करने के लिये कहा है।"

उसने अपना सूअर का मॉस उठाया और वहॉ से चल दिया। वह सारे दिन चलता रहा। शाम को वह एक ऐसी जगह आ गया जहॉ बहुत तेज़ रोशनी हो रही थी। उसने सोचा शायद यही वह जगह होगी जहॉ मेरा भाई चाहता है कि मैं जाऊँ सो वह उधर ही की तरफ चल दिया।

[10] Translated for the word "Bacon"

सबसे पहले उसको एक बूढ़ा मिला जिसकी बहुत लम्बी सफेद दाढ़ी थी। वह एक छोटे से घर[11] में खड़ा हुआ था और क्रिसमस के मौके पर आग जलाने के लिये कुल्हाड़ी से लकड़ी काट रहा था।

गरीब भाई बोला — "गुड ईवनिंग।"

बूढ़ा बोला — "तुमको भी गुड ईवनिंग। पर इतनी देर से तुम इधर कहाँ जा रहे हो?"

"ओह मैं? मैं तो इधर से नरक जा रहा हूँ। काश मुझे वहाँ जाने का ठीक रास्ता पता होता।"

बूढ़ा बोला — "तुम कोई ज़्यादा गलत रास्ते पर नहीं हो। यह नरक ही है। जब तुम इसके अन्दर जाओगे तो सब लोग वहाँ पर तुम्हारा यह सूअर का माँस खरीदने के लिये खड़े होंगे क्योंकि नरक में माँस बड़ी मुश्किल से मिलता है।

पर ध्यान रखना कि तुम अपना यह माँस उनको उस समय तक मत बेचना जब तक वे तुमको अपनी हाथ से चलाने वाली चक्की न बेच दें। वह चक्की वहीं दरवाजे के पीछे रखी है।

जब तुम उसको ले कर बाहर आ जाओगे तब मैं तुम्हें बता दूँगा कि उसको कैसे इस्तेमाल करना है। क्योंकि वह किसी भी चीज़ को पीस सकती है।"

[11] Translated for the word "Outhouse"

सो उस गरीब भाई ने उस बूढ़े को उसकी इस अच्छी सलाह के लिये धन्यवाद दिया और शैतान[12] के घर के दरवाजे को बहुत ज़ोर से खटखटाया।

दरवाजा खुला और वह छोटा भाई अन्दर गया तो जैसा उस बूढ़े ने उससे कहा था वैसा ही हुआ। वहाँ सारे छोटे बड़े शैतान चींटियों की तरह से उसके चारों तरफ इकट्ठा हो गये। उनमें से हर एक उसके माँस के लिये ज़्यादा से ज़्यादा पैसे देने को तैयार था।

आदमी बोला — "हालाँकि इस माँस पर मेरा और मेरी पत्नी का तुम सब लोगों से ज़्यादा अधिकार है पर क्योंकि तुम लोगों को यह बहुत ज़्यादा पसन्द आ गया है तो मैं इसे तुमको दे देता हूँ।

पर अगर मैं इसे तुम्हें बेचता हूँ तो मुझे इसके बदले में हाथ की चक्की चाहिये जो तुम्हारे दरवाजे के पीछे रखी है।"

पहले तो शैतान ने इस तरह के सौदे को सुना ही नहीं और केवल उससे माँस देने के लिये ही कहता रहा पर वह आदमी भी अपनी बात पर अड़ा ही रहा। सो आखिर उस शैतान को उस आदमी के माँस के बदले में अपनी चक्की उसको देनी ही पड़ी।

उस आदमी ने शैतान को माँस दिया, अपनी चक्की उठायी और घर के बाहर आ गया। बाहर आ कर उसने उस बूढ़े से उस चक्की को इस्तेमाल करना सीखा और जब उसने वह उससे सीख लिया तो

[12] Translated for the word "Devil"

वह जितनी जल्दी से वहॉ से आ सकता था उतनी जल्दी से अपने घर आ गया।

फिर भी उसके आने से पहले ही घड़ी ने रात के बारह बजा दिये थे। उसकी पत्नी पूछा — "अरे तुम कहॉ रह गये थे यहॉ मैं तुम्हारा घंटों से लकड़ी की ये दो डंडियॉ लिये क्रिसमस की आग जलाने के लिये इन्तजार कर रही हूँ।"

आदमी बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि मैं इससे पहले आ ही नहीं सका क्योंकि मुझे पहले एक चीज़ के लिये एक तरफ जाना पड़ा और फिर दूसरी चीज़ के लिये दूसरी तरफ। पर अब तुम देखो कि मैं तुम्हें क्या दिखाता हूँ।"

कह कर उसने अपनी चक्की निकाली और उसे एक मेज पर रख दी। सबसे पहले उसने रोशनी पिसवायी, फिर मेजपोश पिसवाया, फिर मॉस पिसवाया और फिर शराब पिसवायी। उसके बाद वह तब तक चीज़ें पिसवाता रहा जब तक उसके पास क्रिसमस मनाने के लिये उसकी जरूरत का सब सामान नहीं हो गया।

उसको बस एक शब्द बोलने की जरूरत थी और चक्की उसके लिये वह सब पीस देती थी जो वह कहता था।

उसकी पत्नी तो बस अपने सितारों की तारीफ करती ही खड़ी रह गयी। वह तो बस बार बार यही पूछती रही कि यह चक्की उसके पास आयी कहॉ से। पर उसने उसको बता कर नहीं दिया कि वह उसके पास कहॉ से आयी।

"बस यही तो एक चीज़ है जो मैंने पायी है। तुम देख रही हो न कि यह कितनी अच्छी है। इसके अलावा इसके पीसने की धार कभी जमती नहीं है।"

सो उसने मॉस, शराब और बहुत सारी खाने की चीज़ें उस चक्की से पीसीं जो उसके लिये **12** दिन तक चलती रहतीं।

तीसरे दिन उसने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को एक बहुत बढ़िया दावत खाने के लिये अपने घर बुलाया। इस दावत में उसका भाई भी था।

जब उसके भाई ने मेज पर इतना सारा सामन देखा और साथ में उसके भंडार में उससे भी ज़्यादा सामान देखा तो वह बहुत परेशान हो गया। क्योंकि वह तो यह बात सह ही नहीं सका कि उसके भाई के पास कुछ हो।

उसने लोगों से कहा — "यह अभी क्रिसमस की शाम की ही तो बात है कि यह बहुत दुखी था और मुझसे भगवान के नाम पर एक कौर खाने का मॉग रहा था। और आज तो यह इतनी शानदार दावत दे रहा है जैसे यह कोई काउन्ट[13] या राजा हो।"

फिर वह अपने भाई की तरफ पलटा और उससे कहा — "नरक के नाम पर तुमको यह इतनी सारा खजाना कहॉ से मिल गया?"

[13] Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

चक्की के मालिक ने कहा — "दरवाजे के पीछे से।" क्योंकि उसने इस बात की बिल्कुल चिन्ता नहीं की कि वह अपनी चक्की का भेद खोल रहा है।

बाद में शाम को जब उसने कुछ ज़्यादा ही पी ली तो वह इस भेद को बिल्कुल ही नहीं छिपा सका। वह अन्दर से अपनी चक्की निकाल लाया और बोला — "देखो क्या चीज़ मेरे लिये यह खजाना ले कर आयी है।" और यह कह कर उसने उस चक्की से बहुत तरीके की चीज़ें बनाना शुरू कर दिया।

जब उसके भाई ने यह देखा तो उसका दिल उसको लेने पर आ गया और काफी पीछे पड़ने के बाद उसने उससे वह चक्की ले ली। पर इसके बाद उसको उसे **300** डालर देने पड़े।

गरीब भाई ने चक्की के लिये यह सौदा किया कि वह उसको केवल अपनी फसल काटने तक रखेगा फिर उसको दे देगा।

क्योंकि गरीब भाई ने सोचा कि अगर मैंने इसको तब तक रख लिया तो तब तक तो मैं इससे काफी मॉस और शराब बना लूँगा जो मेरे लिये सालों तक चलेगा। इस तरह से चक्की को भी बिना काम के जंग नहीं लगेगा।

सो जब फसल काटने का समय आया तो अमीरे भाई ने उसको अपने गरीब भाई से ले लिया। गरीब भाई ने जान बूझ कर अपने अमीर भाई को उस चक्की को इस्तेमाल करना नहीं सिखाया।

शाम के समय बड़ा भाई उस चक्की को ले कर घर आ गया। अगले दिन सुबह सुबह उसने अपनी पत्नी को अनाज फटकने के लिये खेत भेज दिया और घास काटने वालों ने घास काटनी शुरू कर दी। वह घर में खाना बनाने के लिये घर रह गया।

जब खाना खाने का समय आया तो उसने उस चक्की को मेज पर रखा और उससे कहा — "तुम मछली और सूप बनाओ और देखो उनको बहुत ही अच्छा और जल्दी बनाना।"

यह सुन कर चक्की ने मछली और सूप बनाना शुरू कर दिया। अब सबसे पहले तो खाना रखने वाले बरतन भरे, फिर बाद में बड़े बड़े टब भरे। लेकिन जब उसको रोका नहीं गया तो वह सूप आदि उन टबों में से निकल कर बाहर निकल कर रसोईघर के फर्श पर बिखरने लगा।

यह देख कर बड़ा भाई बेचैन हो उठा। वह उसको कैसे रोके उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था।

वह उसके सामने कभी इधर को मुड़ रहा था तो कभी उधर को। कभी वह उसके इधर को उँगली दिखा रहा था तो कभी उधर को। पर इससे तो कुछ भी नहीं हो रहा था। वह चक्की रुक ही नहीं रही थी।

सूप इतना ज़्यादा बिखरता जा रहा था कि अब वह बड़ा भाई भी उसमें डूबने वाला हो रहा था। डर के मारे उसने रसोईघर का दरवाजा खोला और बाहर की तरफ भागा।

पर यह तो काफी नहीं था। इतनी देर में चक्की ने सूप को बना कर बाहर तक फैला दिया था। किसी तरह से अपनी जान बचा कर उस सूप में से हो कर वह अपने घर के बाहर का दरवाजा खोल सका।

उसने अपने घर का दरवाजा खोला और घर के बाहर भागा और उसके पीछे पीछे भागे मछली और सूप का समुद्र। ऐसा लग रहा था जैसे सारे खेत पर कोई बहुत बड़ा झरना गिर रहा हो।

इधर उसकी पत्नी को जो खेत में अनाज फटक रही थी लगा कि अब तो खाने के समय को भी काफी देर हो गयी है सो उसने घास काटने वाले मजदूरों से कहा — "हालॉकि मालिक ने अभी हमको खाना खाने के लिये नहीं बुलाया है फिर भी अब हम घर जा सकते हैं।

हो सकता है कि उनको सूप बनाने में देर लग रही हो और अगर मैं उसको सूप बनाने में उनकी सहायता करूँ तो शायद उनको अच्छा लगे।"

भूख तो उनको भी लगी थी सो वे सब घर जाने के लिये तैयार हो गये। पर वे जैसे ही पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे तो उन्होंने क्या देखा कि ऊपर से मछलियों, सूप और रोटी की नदी सी बहती चली आ रही है। और मालिक उन सबके आगे अपनी जान बचाने के ल्यि भागता आ रहा है।

वह चिल्लाता आ रहा था — "भागो अपनी जान बचा कर भागो। तुम लोग इस सूप में कहीं डूब मत जाना।"

वह सीधा अपने भाई के घर भागा गया क्योंकि उसको लग रहा था कि वह बुरी मशीन बस उसके पीछे ही थी और जा कर उससे बोला — "तुम इसको तुरन्त ही वापस ले लो। अगर इसने एक घंटा और यह सब बनाया तो ये मछलियॉ और सूप इस सारे गॉव को डुबो देंगीं।"

पर उसका गरीब भाई तो उसकी इस बात को सुन ही नहीं रहा था। वह उसको तब तक वापस लेने को तैयार नहीं था जब तक वह उसको **300** डालर और नहीं दे देता।

अमीर भाई बेचारा मरता क्या न करता। उसने अपने गरीब भाई को **300** डालर दिये तब कहीं जा कर उसके गरीब भाई ने अपने अमीर भाई से वह चक्की वापस ली।

यह सब लेने के बाद छोटे भाई ने अपने खेत पर एक बहुत ही शानदार मकान बनवाया – अपने भाई के मकान से भी ज़्यादा शानदार। फिर उसने उस चक्की से इतना सारा सोना बनवाया कि उस सोने से उसने अपना सारा मकान ढक लिया।

क्योंकि उसका खेत समुद्र के पास था तो उसका मकान भी समुद्र से खूब चमकता था। जो लोग उस समुद्र से हो कर जाते थे वे उस अमीर आदमी का घर और उसकी वह आश्चर्यजनक चक्की भी देखने आते थे।

इस सबसे वह चक्की अब दूर दूर तक मशहूर हो गयी थी। अब दुनियॉ में कोई ऐसा नहीं था जिसने उस चक्की के बारे में न सुना हो। लोग दूर दूर से उसे देखने के लिये आते थे।

एक दिन एक जहाज़ का कैप्टेन उधर आ निकला। वह भी उस चक्की को देखना चाहता था सो वह चक्की के मालिक के पास आया और उसने चक्की के मालिक से पूछा कि क्या उसकी चक्की नमक बना सकती थी।

चक्की का मालिक बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। मुझे लगता है कि यह नमक जरूर बना सकती है। यह कुछ भी बना सकती है।"

कैप्टेन ने जब यह सुना तो वह तो बहुत खुश हो गया। वह सोचने लगा कि यह चक्की तो उसको किसी भी कीमत पर इस आदमी से ले लेनी चाहिये क्योंकि इससे उसकी नमक लाने के लिये जो वह इतनी लम्बी लम्बी समुद्र यात्राऐं करता है वह इन यात्राओं से बच जायेगा।

पहले तो वह आदमी उस चक्की को अपने से अलग नहीं करना चाहता था पर उस कैप्टेन ने उससे उस चक्की को उसे देने के लिये इतनी मिन्नतें कीं कि फिर उसको उसे चक्की देने के लिये राजी होना ही पड़ा। उसने उस चक्की के कई हजार डालर मॉगे।

पैसे दे कर और चक्की अपनी कमर पर लाद कर वह कैप्टेन तुरन्त ही अपने जहाज़ पर आ गया ताकि कहीं वह आदमी अपना दिमाग न बदल ले और अपने जहाज़ पर आ कर उसने अपना

जहाज़ खे दिया।। इस जल्दी में वह उससे यह भी नहीं पूछ सका कि उस चक्की को चलाते कैसे हैं।

जब वह कुछ दूर आ गया तब वह चक्की निकाल कर लाया और उसको जहाज़ के डैक पर रख दिया — "नमक बना, जल्दी और अच्छा।"

कैप्टेन के यह कहते ही चक्की ने नमक बनाना शुरू कर दिया। उसमें से थोड़ा सा नमक पानी में भी गिर पड़ा। जब कैप्टेन की जहाज़ नमक से भर गया तो कैप्टेन ने उसको रोकना चाहा।

रोकने के लिये उसने उसे कई तरह से घुमाया और भी कई तरकीबें इस्तेमाल कीं पर उसकी कोई तरकीब काम नहीं की। वह उस चक्की को नमक बनाने से नहीं रोक सका।

नमक का ढेर ऊँचे से ऊँचा होता चला गया और उसके बोझ से उसका जहाज़ समुद्र में डूब गया। जहाज़ के साथ साथ वह चक्की भी समुद्र के पानी में डूब गयी और समुद्र की तली में जा कर बैठ गयी पर उसका नमक बनाना नहीं रुका।

वह वहाँ समुद्र की तली में पड़ी पड़ी आज भी नमक बना रही है। पर अब वह रुके कैसे, कोई उसको रोकने वाला ही नहीं है। जो था वह तो कभी का मर चुका और दूसरे लोग उसको रोकना जानते नहीं। इसी लिये सारा समुद्र आज तक खारा है और शायद हमेशा रहेगा।

3 समुद्र क्यों कराहता है[14]

बच्चों क्या तुम कभी समुद्र के पास खड़े हुए हो? शान्ति से अकेले में। नहीं न। अगर तुम कभी ऐसे ही शान्ति से अकेले में उसके पास खड़े हो तो तुमको लगेगा कि जैसे समुद्र कराह रहा हो। क्या कभी तुमने यह जानने की कोशिश की है कि तुमको ऐसा क्यों लगता है?

ऐसा क्यों है की कहानियों की यह कहानी कि समुद्र क्यों कराहता है दक्षिण अमेरिका के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक राजकुमारी थी जो एक बहुत ही शानदार महल में रहती थी। उसके महल के चारों तरफ बहुत सुन्दर बागीचा था जिसमें बहुत सुन्दर सुन्दर फूल लगे हुए थे बड़े बड़े ऊँचे ऊँचे पेड़ लगे हुए थे और बहुत सारी झाड़ियाँ लगी हुई थीं।

पर राजकुमारी को उस सारे बागीचे में एक कोना बहुत अच्छा लगता था जो समुद्र तक चला गया था। राजकुमारी बहुत अकेली थी सो वह वहाँ बैठ कर समुद्र की बदलती हुई सुन्दरता को देखती रहती।

---

[14] Why the Sea Moans – a folktale from Brazil, South America.
Taken from the Web Site :
http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_21.html
These tales appear in a Book : "Fairy Tales From Brazil: How and Why Tales from Brazilian Folklore", by Elsie Spicer Eells. Chicago, Dodd, Mead and Company, Inc. 1917. 18 Tales. This book is given at the above Web Site.

उस राजकुमारी का नाम था डायोनिशिया[15]। उसको अक्सर ही यह लगता कि जब भी वह समुद्र किनारे की तरफ आता तो वह पुकारता "डा यो नि शिया, डा यो नि शिया।"

एक दिन वह छोटी राजकुमारी वहाँ समुद्र के किनारे अकेली बैठी बैठी समुद्र को देख रही थी कि उसने सोचा — "ओह मैं कितनी अकेली हूँ। काश मेरे साथ भी खेलने के लिये कोई होता।

जब मैं अपने शाही रथ में सवार हो कर बाहर निकलती हूँ तो मैं देखती हूँ कि सारे बच्चे अपने हमउम्र लड़के लड़कियों के साथ खेलते रहते हैं। पर क्योंकि मैं राजकुमारी हूँ इसलिये मेरे पास खेलने के लिये कोई नहीं आता।

अगर मुझे राजकुमारी ही होना है और मैं दूसरे बच्चों के साथ नहीं खेल सकती तो भी तो मेरे पास कोई ज़िन्दा आदमी खेलने के लिये होना ही चाहिये न।"

उसी समय एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना घटी। समुद्र ने बड़ी साफ पर धीमी आवाज में पर बार बार कहा जिससे किसी को कोई गलती न लगे "डा यो नि शिया, डा यो नि शिया।"

अपना नाम सुन कर राजकुमारी अपनी जगह से उठ कर समुद्र के किनारे की तरफ गयी। वह समुद्र के केवल इतनी ही पास गयी जिससे उसके शाही जूते और मोज़े समुद्र के पानी में न भीगें।

[15] Dionysia – name of the princess

तभी समुद्र में से एक बहुत बड़ी लहर आयी और उसके साथ आयी एक समुद्री सॉपिन[16] उससे मिलने के लिये।

हालॉकि उसने उसको पहले कभी देखा नहीं था पर क्योंकि उसने अपनी किताबों में उसकी तस्वीर देखी थी इसलिये वह उसको तुरन्त ही पहचान गयी कि वह एक समुद्री सॉपिन थी। हालॉकि यह समुद्री सॉपिन उसकी किताब की तस्वीर से कुछ अलग थी।

हालॉकि वह सॉपिन बहुत ही बड़ी और भयानक दिखायी दे रही थी फिर भी वह बहुत दयालु नम्र और अच्छी सी भी दिखायी दे रही थी।

डायोनिशिया बोली — "आओ न मेरे साथ खेलो।"

सॉपिन बोली — "मेरा नाम लैबिस्मैना[17] है और मैं तुम्हारे साथ खेलने के लिये ही आयी हूँ।"

इस बात से तो राजकुमारी बहुत खुश हो गयी। अब जब भी राजकुमारी अकेली होती तो वह समुद्री सॉपिन उसके साथ खेलने के लिये वहॉ रोज आ जाती। पर जब कोई दूसरा राजकुमारी के पास आता तो वह तुरन्त ही समुद्र में छिप जाती ताकि केवल डायोनिशिया ही उसको देख पाती दूसरा नहीं।

[16] Translated for the words "Sea Serpent"

[17] Labismena – name of the sea serpent

साल पर साल गुजरते रहे और राजकुमारी हर साल बड़ी होती रही। अब वह 16 साल की हो गयी थी और बड़ी भी हो गयी थी। पर वह अभी भी उस समुद्री सॉपिन के साथ खेलना पसन्द करती थी। वे दोनों अक्सर समुद्र के किनारे पर साथ साथ होते।

एक दिन जब वे दोनों समुद्र के किनारे पर घूम रहे थे तो समुद्री सॉपिन ने दुखी नजरों से डायोनिशिया की तरफ देखा और बोली — "डायोनिशिया मैं भी इन सालों में बड़ी होती रही हूँ। अब समय आ गया है जब हम लोग एक साथ नहीं खेल सकते। पर मैं तुम्हें कभी भूलूँगी नहीं और हमेशा तुम्हारी दोस्त रहूँगी।

मुझे आशा है कि आगे कभी तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी पर अगर कभी भी तुम्हें कोई परेशानी हो तो बस मेरा नाम ले कर पुकार लेना मैं तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगी।"

उसके बाद वह समुद्री सॉपिन वहीं समुद्र में गायब हो गयी।

इन्हीं दिनों एक पड़ोसी राजा की पत्नी मर गयी। जब वह मरने वाली थी तो उसने राजा को जवाहरात जड़ी एक अँगूठी दी और कहा — "जब भी कभी तुम दोबारा शादी करना चाहो तो केवल उसी राजकुमारी से शादी करना जिसकी उँगली में यह ठीक से आ जाये। न तो यह उसके बहुत कसी हो और न ही उसके यह ढीली हो।"

उसके मरने कुछ समय बाद उस राजा ने दूसरी शादी करनी चाही सो उसने अपने लिये कोई लड़की ढूँढनी शुरू की। वह हर

एक को वह अँगूठी पहना कर देखता तो किसी की उँगली में वह बहुत कसी हुई आती तो किसी की उँगली में वह ढीली रहती।

उसको अभी तक कोई ऐसी राजकुमारी नहीं मिली थी जिसकी उँगली में वह ठीक से आ जाती।

ढूँढते ढूँढते वह उस महल में आया जिसमें डायोनिशिया रहती थी। पर राजकुमारी के अपने सपने थे एक नौजवान सुन्दर राजकुमार के जो आयेगा और उसको ले जायेगा। सो वह इस शादी से बिल्कुल खुश नहीं थी। राजा बूढ़ा भी था और सुन्दर भी नहीं था।

जब उस राजकुमारी को वह अँगूठी पहना कर देखी गयी तो राजकुमारी ने बहुत चाहा कि वह अँगूठी उसकी उँगली में ठीक न बैठे पर वह तो उसके बिल्कुल ठीक आ गयी।

राजा यह देख कर बहुत खुश हुआ कि कम से कम किसी राजकुमारी के तो वह अँगूठी ठीक आ गयी। पर यह देख कर डायोनिशिया बहुत डर गयी।

उसने अपने पिता से पूछा — "पिता जी क्या मुझे इस राजा से शादी करनी ही पड़ेगी?"

उसके पिता ने कहा — "बेटी वह तो एक बहुत ही अमीर राजा है और देखो तो उसका कितना बड़ा राज्य है। उसका उससे भी कितना ज़्यादा बढ़िया और शानदार महल है जैसे महल में तुम रहती हो।"

उसका पिता इस बात से खुश नहीं था कि डायोनिशिया इस शादी से खुश नहीं थी। उसने फिर कहा — "तुमको तो अपने आप को दुनियॉ की सबसे ज़्यादा खुशकिस्मत राजकुमारी समझना चाहिये कि उसकी अँगूठी तुम्हारी उँगली में आ गयी।"

पर डायोनिशिया यह सब सोच सोच कर दिन रात रोती रहती।

यह देख कर उसके पिता को चिन्ता हुई कि कहीं वह इतनी दुबली न हो जाये कि फिर उसके वह अँगूठी आये ही नहीं। इसलिये उसने जल्दी जल्दी शादी की तैयारियॉ शुरू कर दीं।

एक दिन डायोनिशिया समुद्र के किनारे घूमने गयी और वहॉ जा कर रोने लगी जैसे उसका दिल ही टूट गया हो। पर तुरन्त ही उसका रोना रुक गया।

वह बोली — "मैं भी कितनी बेवकूफ हूँ कि मेरी दोस्त लैबिस्मैना ने मुझसे कहा था कि जब भी तुम किसी परेशानी में हो तो बस मेरा नाम ले कर पुकार लेना मैं तुम्हारी सहायता के लिये चली आऊँगी। और मैं अपने रोने की बेवकूफी में यह बात तो भूल ही गयी।"

सो वह समुद्र के किनारे के पास गयी और उसने लैबिस्मैना का नाम ले कर उसे पुकारा। वह समुद्री सॉपिन समुद्र में से तुरन्त ही निकल आयी जैसे वह पहले निकला करती थी।

डायोनिशिया ने उससे अपनी सारी परेशानी कही जो उसकी सारी ज़िन्दगी बरबाद करने पर तुली हुई थी।

लैबिस्मैना बोली — "तुम डरो नहीं। तुम अपने पिता से कहो कि तुम उस राजा से शादी तभी करोगी जब वह तुमको एक ऐसी पोशाक ला कर देगा जो खेत और उसके सारे फूलों के रंग की हो।" इतना कह कर वह समुद्री सॉपिन समुद्र में गायब हो गयी।

डायोनिशिया ने अपने पिता से कहा कि वह उस राजा से यह कह दें कि डायोनिशिया उससे तभी शादी करेगी जब वह उसको एक ऐसी पोशाक ला कर देगा जो खेत और उसके सारे फूलों के रंग की हो।

वह राजा तो डायोनिशिया से बहुत प्यार करता था सो वह इस बात से बहुत खुश हुआ कि उसने उससे किसी चीज़ की मॉग की। उसने ऐसी पोशाक सारे में ढूँढी जो खेत और उसके सारे फूलों के रंग की हो।

हालॉकि यह काम बहुत मुश्किल था फिर भी उसको एक पोशाक ऐसी मिल ही गयी। तुरन्त ही वह पोशाक उसने डायोनिशिया के लिये भिजवा दी।

जब डायोनिशिया ने देखा कि राजा ने तो वैसी पोशाक उसके लिये भिजवा दी तो उसको लगा कि अब वह उससे कैसे बचे। अब तो उसको उस राजा से शादी करनी ही पड़ेगी।

सो जैसे ही उसको महल से निकलने का समय मिला वह फिर समुद्र के किनारे गयी और अपनी दोस्त लैबिस्मैना को पुकारा। लैबिस्मैना फिर से समुद्र में से तुरन्त ही बाहर आ गयी।

उसने डायोनिशिया से कहा — "तुम डरो नहीं। अबकी बार तुम राजा से कहो कि तुम उससे शादी तभी करोगी जब वह तुमको समुद्र और उसके अन्दर रहने वाली सारी मछलियों के रंग की पोशाक ला कर देगा।" यह कह कर वह फिर समुद्र में गायब हो गयी।

डायोनिशिया ने यही बात अपने पिता से राजा से कहने के लिये कह दी। पर जब राजा ने उसकी यह नयी मॉग सुनी तो वह बहुत ही नाउम्मीद हुआ।

फिर भी उसने उसके लिये वैसी पोशाक ढूँढने की कोशिश की। काफी पैसे खर्च करके किसी तरह वह उसके लिये वैसी एक पोशाक खरीद सका।

जब डायोनिशिया ने देखा कि राजा को समुद्र और उसमें रहने वाली सारी मछलियों के रंगों की पोशाक मिल गयी है तो वह फिर से दुखी हो गयी। वह फिर से अपनी दोस्त के पास उसकी राय लेने पहुँची।

लैबिस्मैना फिर समुद्र से बाहर आयी और बोली — "तुम डरो नहीं। इस बार तुम उससे आसमान और उसके सारे तारों के रंग की पोशाक मॉग लो।"

अबकी बार जब राजा ने डायोनिशिया की ऐसी मॉग सुनी तो उसका दिल टूट गया पर जब उसने यह सुना कि यह उसकी बस आखिरी मॉग थी तो उसने उसके ऊपर काफी पैसा खर्च करना तय

कर लिया। आखिर उसको वैसी एक पोशाक मिल गयी। सो उसने वह पोशाक ला कर उसको भिजवा दी।

जब डायोनिशिया ने देखा कि राजा ने तो वैसी पोशाक भी उसके लिये भेज दी तो अब उसके पास उससे शादी न करने की कोई वजह नहीं थी।

वह फिर अपनी दोस्त के पास उससे सहायता माँगने गयी हालाँकि उसको लग रहा था कि अबकी बार शायद वह उसकी कोई सहायता नहीं कर पायेगी पर फिर भी... ।

लैबिस्मैना तुरन्त ही समुद्र से बाहर आयी।

उसने डायोनिशिया से कहा — "तुम घर जाओ और अपनी खेतों और उसके सारे फूलों वाले रंग की पोशाक लो फिर समुद्र और उसमें रहने वाली सारी मछलियों के रंग वाली पोशाक लो और फिर आसमान और उसमें सारे तारों के रंग की पोशाक लो और उन सब पोशाकों को ले कर तुरन्त ही यहाँ लौट कर आओ।

तब तक मैं तुम्हारे लिये तुमको चौंका देने वाली एक चीज़ तैयार करके रखती हूँ।"

जितने समय में वह राजा डायोनिशिया के लिये पोशाकें खरीदने में लगा हुआ था वह समुद्री सॉपिन डायोनिशिया के लिये एक जहाज़ तैयार करने में लगी हुई थी।

डायोनिशिया ने अपनी तीनों पोशाकें एक बक्से में बन्द कीं और उनको ले कर वह तुरन्त ही समुद्र के किनारे आ गयी। वहाँ आ कर

उसने देखा तो वहॉ तो एक सुन्दर सी नाव उसका इन्तजार कर रही थी।

उसने जैसी नावें अब तक देखी थीं वह वैसी नावों की तरह नहीं थी। वह तो उसमें अन्दर बैठने से भी डर रही थी कि तभी लैबिस्माने ने उससे उसमें बैठने के लिये कहा और बोली —

"यह छोटी सी नाव जो मैंने तुम्हारे लिये बनायी है यह तुम्हें बहुत दूर एक राजकुमार के राज्य में ले जायेगी जो दुनियॉ का सबसे सुन्दर राजकुमार है। जब तुम उसको देखोगी तो तुम उससे जरूर ही शादी करना चाहोगी।"

डायोनिशिया बोली — "ओह लैबिस्माने मैं इस सबके लिये जो कुछ भी तुमने मेरे लिये किया है तुमको धन्यवाद कैसे दूॅ।"

लैबिस्माने बोली — "तुम मेरे लिये एक सबसे बड़ा काम कर सकती हो। हालॉकि यह बात मैंने तुमसे कभी कही नहीं और मुझे यह लगता भी नहीं कि कभी तुमको इस बात का शक भी हुआ कि मैं एक राजकुमारी हूॅ जिस पर जादू डाल दिया गया है।

मुझे इसी समुद्री सॉपिन के रूप में रहना है जब तक कि दुनियॉ की कोई सबसे खुश लड़की अपने सबसे ज़्यादा खुशी के मौके पर मेरा नाम तीन बार न पुकारे।

तुम अपनी शादी के दिन दुनियॉ में सबसे खुश लड़की होगी और अगर तुम उस दिन मेरा नाम तीन बार लेने की याद रखो तो मैं

इस जादू से छूट जाऊँगी। फिर मैं भी समुद्री सॉपिन होने की बजाय तुम्हारी तरह एक सुन्दर राजकुमारी बन जाऊँगी।"

डायोनिशिया ने अपनी दोस्त को इस बात का वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगी। समुद्री सॉपिन ने भी पक्का करने के लिये उससे यह तीन बार पूछा कि क्या वह इस बात को याद रखेगी।

डायोनिशिया ने भी उसको तीन बार वायदा किया कि वह वैसा ही करेगी। फिर उसने अपनी दोस्त को गले लगाया और एक बार फिर से उसको धन्यवाद दे कर वह उस नाव को खे कर वहॉ से चल दी और समुद्री सॉपिन वहीं समुद्र में ही गायब हो गयी।

डायोनिशिया वहॉ से चल दी और एक बहुत ही सुन्दर टापू पर पहुँच गयी। उसको लगा कि वह शायद अपनी जगह आ गयी थी सो वह वहॉ उतर गयी। वह अपनी पोशाकों का बक्सा लाना नहीं भूली। पर जैसे ही वह नाव में से उतरी वह नाव वहॉ से चल दी।

डायोनिशिया ने सोचा — "अरे अब मैं क्या करूँ मेरी नाव तो चली गयी और मुझे यहॉ छोड़ गयी। मैं अब अपना खाना पीना कैसे खाऊँगी? उफ़ मैंने तो सारी ज़िन्दगी कोई काम का काम ही नहीं किया।"

डायोनिशिया को अपने खाने पीने का कुछ न कुछ तो इन्तजाम करना ही था। सो वह तुरन्त ही वहॉ से यह देखने के लिये चल दी कि उसको वहॉ क्या मिलता है।

वह खाने और काम के लिये घर घर गयी तो एक महल के पास आ पहुँची। जब वहाँ उसने काम और रहने की जगह के बारे में पूछा तो वहाँ उससे कहा गया कि उनको एक नौकरानी की सख्त जरूरत थी जो उनकी मुर्गियों की देखभाल कर सके।

डायोनिशिया ने सोचा कि यह काम तो वह कर सकती है सो उसने वहाँ वह काम करना स्वीकार कर लिया।

हालाँकि यह काम महल में एक राजकुमारी होने से बहुत अलग था पर कम से कम इसकी वजह से उसको उस टापू पर रहने की जगह और खाना मिल रहा था।

और जब वह उस बूढ़े राजा से शादी के बारे में सोचती तो उसको अपना घर छोड़ने का बिल्कुल भी अफसोस नहीं होता।

समय गुजरता रहा और एक दिन उसने सुना कि शहर में एक बड़ा उत्सव होने वाला है। डायोनिशिया के अलावा महल का हर आदमी उस उत्सव में गया। पर उसको तो मुर्गियों की देखभाल करनी थी न सो लोग उसको वहीं छोड़ गये।

पर जब सब उस उत्सव में चले गये तो डायोनिशिया ने भी सोचा कि वह भी उस उत्सव में जायेगी। उसने अपने बालों में कंघी की अपना खेतों और उसमें उगे हुए सब फूलों के रंग वाली पोशाक पहनी।

उसको यकीन था कि इस पोशाक में उसको कोई नहीं पहचान पायेगा कि वह महल की नौकरानी थी जो वहॉ मुर्गियों की देखभाल करती थी और वे उसको वहॉ छोड़ गये थे।

वह तुरन्त ही उत्सव में चली गयी और बस नाच के लिये समय पर ही पहुॅच पायी। उस उत्सव में सबने उसको उस खेतों और उसमें उगे हुए सब फूलों के रंगों वाली पोशाक में देखा। राजकुमार तो उसको देख कर उसके प्यार में पागल सा ही हो गया।

किसी ने पहले उसको कभी देखा नहीं था इसलिये कोई यही नहीं बता सका कि वह अजनबी लड़की कौन थी और कहॉ से आयी थी।

उत्सव खत्म होने से पहले ही डायोनिशिया वहॉ से खिसक ली और जब राजमहल के सारे लोग घर वापस आये तो वह अपनी मुर्गियों की देखभाल ही कर रही थी जैसी कि वे उसको छोड़ कर गये थे।

उत्सव के दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। महल के सारे लोग उस उत्सव में चले गये और उस नौकरानी को मुर्गियों की देखभाल के लिये छोड़ गये।

इस दिन भी डायोनिशिया ने वैसा ही किया। जब महल के सब लोग चले गये तो उसने अपने बालों में कंघी की अपनी समुद्र और उसमें रहने वाली सारी मछलियों के रगों वाली पोशाक पहनी और

उत्सव में चल दी। इस दिन भी वह बस समय पर ही नाच में पहुँच पायी।

इस दिन भी सब उसी की तरफ देख रहे थे बल्कि इस दिन और ज़्यादा लोग उसकी तरफ देख रहे थे। और राजकुमार तो उसके प्यार में फिर से पागल था।

उत्सव खत्म होने से पहले ही वह वहाँ से फिर खिसक ली। लोगों को फिर पता नहीं चला कि वह कौन थी और कहाँ से आयी थी। जब सब लोग महल लौटे तो वह फिर वहीं अपनी मुर्गियों की देखभाल कर रही थी।

घर लौटने पर राजकुमार ने अपनी माँ से कहा — "माँ क्या तुमको ऐसा नहीं लगा कि यह लड़की जो उत्सव में आयी थी वह अपनी मुर्गियों की देखभाल करने वाली नौकरानी थी?"

"तुम क्या बात करते हो? मुर्गियों की देखभाल करने वाली नौकरानी के पास भला ऐसी पोशाकें कहाँ से आ सकती हैं?"

सो अपनी बात को जाँचने के लिये उसने अपने शाही सलाहकार से यह पता करने के लिये कहा कि वह यह पता करे कि उनकी मुर्गियों की देखभाल करने वाली वह लड़की उत्सव में गयी थी या नहीं।

पर उसके सारे नौकरों ने कहा कि वे उसको मुर्गियों की देखभाल करते छोड़ गये थे और जब वे घर वापस लौटे तभी भी

वह मुर्गियों की देखभाल ही कर रही थी। पर राजकुमार इस जवाब से सन्तुष्ट नहीं था।

राजकुमार बोला — "कुछ भी हो वह जो कोई भी लड़की थी वह वहॉ सबसे अच्छी थी। मैं उसको अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ। मैं उसको किसी तरह से भी ढूँढ निकालूँगा।"

तीसरे दिन डायोनिशिया अपनी आसमान और उसमें सारे तारों के रंग वाली पोशाक पहन कर गयी। उस दिन तो राजकुमार बस उसके पीछे पागल ही हो गया।

उसको वह यह पूछने के लिये भी नहीं मिली जो वह उससे यह पूछ लेता कि वह कौन थी कहॉ रहती थी पर उसने उसको एक जवाहरात दे दिया।

जब राजकुमार घर वापस लौटा तो उसने खाना खाना ही छोड़ दिया। वह दुबला होता गया और पीला पड़ता गया। वहॉ के सारे लोगों ने अपनी अपनी कोशिशें कर लीं उसको नये नये खाने खिला कर देख लिये पर राजकुमार की भूख वापस नहीं आयी।

आखिर मुर्गियों की देखभाल करने वाली नौकरानी ने भी सोचा कि वह भी राजकुमार के लिये एक खाना बना कर देखेगी शायद वह खाना राजकुमार को अच्छा लगे।

सो राजकुमारी ने मॉस के पानी[18] से एक खाना बनाया और उसको राजकुमार को भेजा। जैसा कि राजकुमार ने और सब खानों

[18] Translated for the word "Broth". Broth is the water in which meat or vegetables are boiled.

के साथ किया था उसको भी वह बिना चखे ही वापस भेजने वाला था कि उसमें पड़े चमकीले जवाहरात ने उसका ध्यान खींच लिया।

उसने पूछा — "यह मॉस का पानी मेरे लिये किसने बनाया?"

मॉ बोली — "यह उस नौकरानी ने बनाया है जो हमारी मुर्गियॉ देखती भालती है।"

"उस नौकरानी को तुरन्त ही मेरे पास भेजो। मैं जानता था कि उत्सव में आने वह लड़की हमारी मुर्गियों की देखभाल करने वाली नौकरानी ही है।"

राजकुमार ने अगले दिन ही डायोनिशिया से शादी कर ली। असल में तो डायोनिशिया उसी पल से दुनियॉ की सबसे खुश लड़की थी जिस पल उसने राजकुमार को देखा था।

पर अफसोस अपनी इस खुशी में वह अपनी बचपन की दोस्त लैबिस्मैना का नाम तीन बार लेना भूल गयी जैसा कि उसने उससे वायदा किया था। क्योंकि उस समय तो वह राजकुमार के अलावा और कुछ सोच ही नहीं सकी।

अब लैबिस्मैना के लिये फिर से राजकुमारी बनने का और कोई तरीका नहीं था। उसको अब समुद्री सॉपिन के रूप में ही रहना था। वह अब कभी राजकुमारी बन कर धरती पर नहीं आ सकती थी और न अपना सुन्दर राजकुमार ही पा सकती थी।

इसी लिये वह आज तक समुद्र में कराहती हुई सुनी जाती है। शायद जब समुद्र का पानी किनारे से टकराता है तो तुमने भी सुना होगा कि वह पुकारता है "डायोनिशिया डायोनिशिया"।

एक समुद्री सॉपिन के दुखी होने के लिये इतना ही काफी है कि जिसके लिये उसने इतना किया हो वह उसको भूल जाये।

4 दादी मकड़ी[19]

क्या तुम्हारे घर में भी मकड़ियों के जाले लगते हैं? क्या तुमको भी हर दूसरे तीसरे महीने उनको साफ करना पड़ता है?

कभी कभी तुम सोचते जरूर होगे कि ये मकड़ियॉ घर में आयीं ही कैसे। ये हमारे घरों से बाहर क्यों नहीं रहतीं। तो लो पढ़ो उत्तर अमेरिका के आदिवासी लोगों में कही सुनी जाने वाली यह लोक कथा जिसमें वे ये बताते हैं कि मकड़ी घर में आयी कैसे।

बहुत दिनों पहले की बात है जब तक भगवान ने धरती और आसमान को अलग नहीं किया था। वे दोनों बहुत पास थे। इतने पास कि आसमान करीब करीब धरती पर ही बैठा रहता था।

चिड़ियें धरती के पास उड़ा करती थीं और जानवर जो धरती पर चलते और दौड़ते थे उनको ऐसा लगता था जैसे कि वे उड़ रहे हों।

ऐसे समय में एक सुबह एक बारहसिंगा[20] एक झील पर पानी पी रहा था कि उसने उस झील के पानी में आसमान की परछाईं देखी

[19] Grandmother Spider – a story from Hopi Native Americans, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=100
Adapted, retold and written by Mike Lockett.

[20] Translated for the word “Moose – Moose is a kind of deer with fork like horns

तो उसको वह परछाईं कुछ अजीब सी लगी सो उसने सिर उठा कर ऊपर हवा में देखा।

उसने देखा कि आसमान तो चल रहा था और वह धरती से दूर उठता जा रहा था। बारहसिंगे ने सोचा — "यह क्या हो रहा है। मैं ऐसा नहीं होने दे सकता। मैं इस आसमान को यहीं रोक कर रखूँगा।"

और उसने आसमान को रोकने के लिये अपने सींग आसमान की तली में घुसा दिये और आसमान को धरती के पास रखने की अपनी भरपूर कोशिश की।

इस काम के लिये उसने और जानवरों को भी अपनी सहायता के लिये बुला लिया पर आसमान तो ऊपर उठता ही रहा और जल्दी ही वह बारहसिंगा भी आसमान के साथ साथ ऊपर उठने लगा।

जैसे ही वह ऊपर उठने लगा तो वह डर गया और डर के मारे उसने अपने सींग आसमान से खींच लिये तो वह एक ज़ोर की आवाज के साथ जमीन पर गिर पड़ा और चीख पड़ा।

एक भालू ने उसकी चीख सुनी तो वह भागा भागा वहाँ आया जहाँ वह बारहसिंगा गिरा था। वहाँ आ कर उसने देखा कि आसमान तो ऊपर उठ रहा है और बारहसिंगा नीचे गिरा पड़ा है।

उसने भी कहा — "मैं ऐसा नहीं होने दे सकता। मैं इस आसमान को यहीं रोक कर रखूँगा।"

सो वह भी ऊपर कूदा और उसने भी आसमान को नीचे लाने के लिये अपने पंजे आसमान की तली में गड़ा दिये। पर आसमान तो ऊँचा और और ऊँचा उठता ही जा रहा था।

जल्दी ही भालू भी आसमान के साथ साथ ऊपर उठने लगा। पर कुछ देर बाद डर के मारे उसने भी अपने पंजे आसमान से खींच लिये तो वह भी एक ज़ोर के धमाके के साथ जमीन पर गिर पड़ा और चीख पड़ा।

भालू की चीख सुन कर और जानवर भी वहाँ आ गये। उन्होंने भी देखा कि आसमान धरती से ऊपर उठता जा रहा है। सो वे भी ऊपर की तरफ कूदे और उन्होंने भी उसको पकड़ कर नीचे रखने की कोशिश की पर कुछ काम नहीं बना।

अब वे सब आपस में बात करने लगे कि इस बारे में क्या करना चाहिये। जब वे कुछ करने के बारे में सोच रहे थे तो एक दादी मकड़ी आयी और बोली — "मेरी समझ में एक बात आती है।"

जानवर बोले — "दादी मकड़ी, यह बहुत ही गम्भीर मामला है। यह तुम्हारे लिये बहुत बड़ा है। यहाँ तक कि बड़ा बारहसिंगा और भालू भी आसमान को नीचे नहीं खींच पाये और वे तो तुमसे बहुत ज़्यादा ताकतवर हैं।"

दादी मकड़ी बोली — "पर तुम देखना कि मेरी तरकीब जरूर काम करेगी।"

जानवर बोले — "हमारे पास ज़्यादा समय नहीं है। यह आसमान तो ऊपर उठता ही जा रहा है। जो कुछ भी करना है हमें जल्दी ही करना है।"

दादी मकड़ी भी परेशान थी पर यह सोच कर वह और भी ज़्यादा परेशान थी कि सारे जानवर परेशान थे।

अपनी तरकीब के अनुसार वह गॉव से बाहर की तरफ भागी और फिर एक पहाड़ी की तरफ चली गयी। वहॉ वह उस पहाड़ी पर चढ़ कर एक लम्बा सा धागा बुनने लगी। वह वह धागा बुनती रही, बुनती रही, बुनती रही।

फिर उसने उस धागे का एक जाला बना दिया। जब वह जाला बना चुकी तो उसने उसकी एक गेंद बना दी। फिर उस जाले की गेंद के जाले का एक सिरा एक पेड़ से बॉध दिया और वह गेंद आसमान की तरफ फेंक दी।

गेंद कुछ दूर तक तो ऊपर गयी पर फिर नीचे गिर पड़ी और खुल गयी। दादी मकड़ी आसमान नहीं पकड़ सकी। वह बेचारी दौड़ी और दौड़ कर अपना सारा जाला इकट्ठा किया और फिर एक बार उस गेंद को आसमान की तरफ फेंका। पर वह दोबारा भी नीचे गिर गयी और गिर कर खुल गयी।

दादी मकड़ी फिर दौड़ी और फिर अपना सारा जाला इकट्ठा किया और तीसरी बार फिर उस गेंद को आसमान की तरफ फेंका।

इस बार उसकी गेंद ने आसमान का सिरा पकड़ लिया और वह आसमान में जा कर चिपक गयी।

दादी मकड़ी जितनी जल्दी उस धागे पर चढ़ सकती थी चढ़ गयी और आसमान को भी पार कर गयी। फिर उसने उस गेंद का दूसरा सिरा आसमान के ऊपर बॉध दिया और धरती पर कूद पड़ी।

जैसे ही वह आसमान से जमीन पर कूदी उसने आसमान से ही एक दूसरा जाला बुनना शुरू कर दिया और उसे वह तब तक बुनती रही जब तक वह जमीन पर नहीं आ गयी।

उसने वह धागा जमीन से चिपकाया और फिर वह पहले धागे के सहारे ऊपर चढ़ गयी। उसके सिरे को फिर आसमान से चिपकाया और फिर जाला बुनती हुई नीचे उतरी। ऐसा उसने कई बार किया।

सारा दिन और सारी रात वह यही करती रही – जमीन से आसमान तक और आसमान से जमीन तक जाला बुनती रही।

अगले दिन आसमान दादी मकड़ी के जाले को जो अभी भी धरती से चिपका हुआ था साथ लिये इतना ऊपर चला गया जितना ऊपर तक वह जा सकता था।

वहॉ पहुॅच कर उसने आखिरी बार एक बार फिर से अपने आपको धरती से ऊपर खींचने की कोशिश की पर उससे और ऊपर वह अपने आपको नहीं खींच सका।

यह देख कर जानवरों ने बात करना बन्द कर दिया और ऊपर आसमान की तरफ देखना शुरू किया तो उन्होंने देखा कि दादी मकड़ी का जाला अभी भी जमीन से चिपका हुआ है और आसमान उसके ऊपर नहीं जा पा रहा है।

यह देख कर वे सब जानवर दादी मकड़ी के पास दौड़े गये और बोले — "हमको अफसोस है दादी मकड़ी कि हमने आपकी तरकीब को पहले नहीं सुना। और इसका और भी ज़्यादा अफसोस है कि हमने आपसे यह कहा कि हमारे पास ज़्यादा समय नहीं है।

आपका बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने आसमान को धरती से ऊपर जाने से रोक लिया। क्योंकि आपने हमारे लिये यह आश्चर्यजनक काम किया है इसलिये आप और आपके बच्चे हमेशा हमेशा के लिये हमारे घरों में रह सकते हैं।

उस दिन के बाद से मकड़े सब आदमियों और जानवरों के घरों में रहते पाये जाते हैं। चाहे सारे आदमी इतने साल पहले मकड़ी से किया गया वायदा भूल गये हों पर मकड़े मकड़ियॉ वह वायदा नहीं भूले।

आज भी अगर तुम सुबह बहुत सवेरे आसमान की तरफ देखो तो तुमको मकड़े आसमान से अपने जाले से लटकते हुए दिखायी देंगे।

कुछ लोग उसको सूरज की किरन कहते हैं पर अब तुमको ज़्यादा अच्छी तरह से मालूम है कि वह क्या है। वे सूरज की किरणें नहीं हैं बल्कि वे सब मकड़े के जाले हैं।

5 सूरज और चॉद आसमान में क्यों रहते हैं[21]

कभी कभी तुम्हारा भी मन करता होगा न सूरज और चॉद से खेलने का? पर तुम खेलो कैसे वे तो आसमान में हैं और तुम आसमान में तो जा नहीं सकते।

पर वे वहॉ रहने ही क्यों चले गये? अगर वे यहॉ रहते तो बच्चों को उनके साथ खेलने में कितना मजा आता। पहले वे धरती पर ही रहते थे। चलो देखते हैं कि वे वहॉ गये ही क्यों। उन्होंने धरती छोड़ी ही क्यों।

यह बात तुम्हें अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश में रहने वाले लोग बतायेंगे। तो लो पढ़ो उनकी यह लोक कथा जो यह बताती है कि वे वहॉ गये ही क्यों।

यह बहुत साल पुरानी बात है जब सूरज और पानी बहुत अच्छे दोस्त हुआ करते थे। दोनों धरती पर एक साथ रहते थे। सूरज तो पानी के घर चला जाता था पर पानी सूरज के घर कभी नहीं गया था।

---

[21] Why the Sun and the Moon Live in the Sky (Tale No 16) – a folktale of Southern Nigeria, West Africa. Adapted from the book : "Folktales From Southern Nigeria" by Elphinstone Dayrell. 1910. Contains 40 stories.
This book is available at: http://www.worldoftales.com/Nigerian_folktales.html
[The same story is given on the following Web Site also :
http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=93 with the title "How Moon and Sun Came to Dwell in the Sky". It says that this story is from Senegal, West Africa.

एक दिन सूरज ने पानी से पूछा — "दोस्त, तुम मेरे घर कभी नहीं आये, क्यों?"

पानी ने जवाब दिया — "सूरज भाई, तुम्हारा घर मेरे लिये छोटा पड़ता है इसी लिये। इसके अलावा अगर मैं तुम्हारे घर अपने सब लोगों के साथ आया तो तुमको अपने घर से बाहर जाना पड़ेगा।"

वह आगे बोला — "अगर तुम मुझे अपने घर बुलाना ही चाहते हो तो तुमको पहले बहुत बड़ा घर बनवाना पड़ेगा। मेरा मतलब है सचमुच में ही बहुत बड़ा क्योंकि मेरे साथ मेरे बहुत सारे लोग हैं।

मैं उनको कहीं और नहीं छोड़ सकता और अगर वे मेरे साथ तुम्हारे घर आये तो वे तुम्हारे घर की बहुत सारी जगह घेर लेंगे।"

सूरज अपने दोस्त पानी को बहुत चाहता था सो उसने पानी से वायदा किया कि वह उसको बुलाने के लिये यकीनन एक बहुत बड़ा घर बनवायेगा।

तुरन्त ही वह अपने घर लौटा और अपनी पत्नी चॉद से उसने वे सब बातें कहीं जो वह अभी अभी पानी से करके आया था। सो अगले दिन से ही सूरज ने एक बहुत बड़ी सी इमारत बनवानी शुरू कर दी जिसमें वह अपने दोस्त पानी को बुलायेगा।

जब वह इमारत बन कर पूरी हो गयी तो उसके अगले ही दिन उसने पानी को अपने घर बुलाया।

पानी सूरज के घर आया और उसने बाहर से ही आवाज लगायी — "दोस्त, क्या मैं अन्दर आ जाऊँ? क्या मेरे अन्दर आने से तुम सुरक्षित रहोगे?"

सूरज ने कहा — "हॉ आ जाओ दोस्त, अन्दर आ जाओ।"

अब क्या था पानी अपनी पूरी शान के साथ सूरज के उस नये बड़े मकान में घुसा। उसके साथ थे बहुत सारी मछलियॉ, मगर और बहुत सारे समुद्री जानवर।

बहुत जल्दी ही सूरज के मकान में घुटनों तक पानी चढ़ गया। सो एक अच्छे दोस्त होने के नाते पानी ने एक बार फिर पूछा — "सूरज भाई, क्या तुम अब भी यकीन के साथ कह सकते हो कि मैं अन्दर आ जाऊँ?"

और सूरज ने फिर वही जवाब दिया — "हॉ हॉ दोस्त, अन्दर आ जाओ।"

जब पानी **8–10** फीट ऊँचा हो गया तो पानी ने फिर पूछा — "क्या मैं अपने और लोगों को भी अन्दर ले आऊँ?"

सूरज और चॉद दोनों ने बिना सोचे समझे जवाब दिया — "हॉ हॉ दोस्त, ले आओ।"

सो पानी और आगे बढ़ा। अब पानी इतना ऊपर चढ़ गया कि सूरज और चॉद को अपनी इमारत की छत पर बैठ जाना पड़ा।

पानी ने फिर पूछा कि क्या वह अन्दर आ जाये और सूरज और चॉद ने फिर कहा कि “हॉ आ जाओ।

और फिर पानी तब तक बढ़ता रहा जब तक सूरज के मकान की छत भी नहीं डूब गयी और सूरज और चॉद को अपना घर छोड़ कर सचमुच में ऊपर आसमान में जाना पड़ा।

तबसे सूरज और चॉद आसमान में रहते हैं और समुद्र जमीन पर।

6 चॉद क्यों घटता बढ़ता है[22]

चॉद **15** दिन तक रोज घटता है फिर **15** दिन तक रोज बढ़ता है। अगर तुम किसी साइन्स पढ़ने वाले से पूछोगे तो वह इसकी तुमको कोई साइन्स की वजह बता देगा।

जैसे "क्योंकि चॉद का जितना हिस्सा सूरज के सामने रहता है वही हमारे भी सामने भी रहता है सो हम चॉद का केवल वही हिस्सा देख पाते हैं जो हमारे सामने है। और यह हिस्सा क्योंकि घटता बढ़ता रहता है इसलिये हमको भी चॉद कम या ज़्यादा दिखायी देता है। इससे हमको लगता है कि चॉद घट बढ़ रहा है।

पर ऐसा नहीं है। इसकी असल वजह तो कुछ और ही है और वह वजह अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश में रहने वाले लोग जानते हैं। तो लो पढ़ो उनकी यह लोक कथा जो वे इस बारे में कहते हैं।

एक बार एक बहुत ही बूढ़ी औरत थी जो बहुत ही गरीब थी। वह एक मिट्टी की बनी हुई झोंपड़ी में रहती थी जिसकी छत पाम के पत्तों की बनी हुई थी। गरीब होने की वजह से उसको खाना भी

[22] Why the Moon Waxes and Wanes (Tale No 26) – a folktale of Southern Nigeria, Africa
Adapted from the book : "Folktales From Southern Nigeria" by Elphinstone Dayrell. 1910.
Contains 40 stories.
This book is available at: http://www.worldoftales.com/Nigerian_folktales.html

ठीक से नहीं मिल पाता था और कोई उसकी देखभाल करने वाला भी नहीं था।

पुराने जमाने में चॉद धरती पर आया करती थी हालॉकि वह अक्सर तो आसमान में ही रहती थी पर फिर भी कभी कभी वह धरती पर आती थी।

चॉद एक बहुत मोटी स्त्री थी और उसकी खाल जानवरों की खाल जैसी थी। उसके शरीर में बहुत मोटा मोटा मॉस था। वह काफी गोल गोल थी और रात को बहुत रोशनी देती थी।

चॉद उस गरीब स्त्री के लिये बहुत दुखी थी सो एक दिन वह उस स्त्री के पास आयी और उससे बोली — "तुम अगर चाहो तो मेरे शरीर में से कुछ मॉस अपने खाने के लिये काट सकती हो।"

सो हर शाम वह स्त्री चॉद के शरीर में से थोड़ा सा मॉस अपने खाने के लिये काट लेती थी और इस तरह अपना पेट भरती थी।

उधर उस स्त्री को अपना मॉस देते देते चॉद रोज पतली होती जाती थी और एक दिन वह पतली होते होते बिल्कुल ही गायब हो गयी। इससे उसकी रोशनी भी कम होती चली गयी और जिस दिन वह गायब हुई उस दिन तो चारों तरफ अॅधेरा ही अॅधेरा रहा।

चॉद की रोशनी कम होने पर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि चॉद की रोशनी इतनी कम कैसे हो गयी।

आखिर लोग उस बूढ़ी स्त्री के घर पहुॅचे तो वहॉ उन्होंने देखा कि एक उसकी झोंपड़ी में एक छोटी सी बच्ची सो रही है। वह

बच्ची वहॉ पर कुछ समय से रह रही थी और रोज चॉद का वहॉ आना देखती थी कि रोज चॉद वहॉ आती थी और रोज वह बुढ़िया चाकू से अपने खाने के लिये उसका मॉस काटती थी।

इस सबको देख कर वह बच्ची इतनी डर गयी थी कि उसने उन लोगों को सारी बात बता दी। यह सुन कर उन लोगों ने उस स्त्री पर पहरा देने का विचार किया।

उसी रात चॉद ऊपर से आयी और वह बूढ़ी स्त्री अपना खाना लेने के लिये चाकू और टोकरी ले कर आयी। पर इससे पहले कि वह चॉद का मॉस काटती सारे लोग चिल्लाते हुए उसकी तरफ दौड़े।

चॉद भी इतनी डर गयी कि वह तुरन्त ही आसमान में वापस चली गयी और फिर कभी नीचे धरती पर वापस नहीं आयी। और वह बेचारी बुढ़िया भूखी मर गयी।

उस दिन से लोगों के डर के मारे चॉद दिन में भी छिपी रहती है और क्योंकि वह इतना डर गयी थी इसलिये वह महीने में एक बार बहुत पतली हो जाती है पर बाद में फिर जब कुछ सॅभलती है तो फिर मोटी हो जाती है।

जब वह खूब मोटी हो जाती है तब खूब रोशनी देती है पर उसकी यह हालत ज़्यादा समय तक नहीं रुकती और वह फिर से पतला होना शुरू हो जाती है जैसे वह उस स्त्री को अपन मॉस देते समय होती थी।

7 बोर्नियो में चीते क्यों नहीं[23]

क्या तुम्हें मालूम है कि दुनियॉ मे बहुत सारे देशों मे चीते पाये जाते हैं पर इन्डोनेशिया के टापुओं[24] में से उसके बोर्नियो टापू पर चीते नहीं पाये जाते। क्यों? ऐसा क्यों है।

यह बड़ी अजीब सी बात है। है न? देखते हैं ऐसा क्यों है। इन्डोनेशिया के लोग इसकी नीचे लिखी वजह बताते हैं।

इन्डोनेशिया के टापू एशिया के दक्षिण पूर्व में स्थित हैं। ये टापू जंगलों से भरे पड़े हैं, यहॉ तक कि उसके तीन बड़े टापू – बोर्नियो, जावा और सुमात्रा भी। उसके हर टापू पर चीते घूमते रहते हैं सिवाय बोर्नियो टापू के। यह कहानी यही बताती है कि बोर्नियो टापू पर चीते क्यों नहीं हैं।

सो यह बहुत पहले की बात है कि इन्डोनेशिया के सभी टापुओं पर चीते सभी जगह घूमा करते थे। ये भूखे जानवर बहुत खाते थे और इतना खाते थे कि दूसरों को खाना मिलना मुश्किल हो जाता था।

---

[23] Why There Are No Tigers in Borneo – a folktale from Indonesia, Asia. Adapted from the Web Site: http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=117

[24] Indonesian Islands – Java, Sumatra, Borneo etc

चीतों का राजा एक सबसे बड़ा चीता था। एक बार उसने अपने एक दूत को बुलाया जो एक चीता ही था और उससे कहा — "जाओ और बोर्नियो के जानवरों के राजा को ढूँढ कर लाओ।

उसको बोलना कि मैं उसके टापू पर अपने भूखे परिवार के साथ जल्दी ही खाना खाने आऊँगा। वह अपने टापू पर बहुत सारे जानवरों को इकट्ठा कर ले और उसको यह दे देना..."

यह कह कर राजा चीता ने अपनी मूँछ का एक लम्बा सा बाल तोड़ा और उस दूत को देते हुए कहा — "यह उसको दिखाना ताकि वह यह समझ ले कि मैं कितना बड़ा और कितना ताकतवर हूँ।" दूत ने वह बाल लिया और बोर्नियो टापू की तरफ चल दिया।

बोर्नियो टापू पर सबसे पहला जानवर जो उसको मिला वह था एक बहुत ही छोटा सा "छोटा हिरन"[25]।

दूत चीता उसको अपने मालिक की मूँछ का बाल देते हुए उससे बोला — "मेरे मालिक ने मुझे यहाँ भेजा है। यह तुम अपने राजा को देना और उसको बताना कि देखो मेरा राजा कितना बड़ा और ताकतवर है।

[25] Translated for the word "Mousedeer" – Also called Chevrotain, this extant species are found in forests in South and Southeast Asia, with a single species in the rainforests of Central and West Africa. They are solitary or live in pairs, and feed almost exclusively on plant material. Depending on exact species, the Asian species weigh between 1.5 and 17.6 lb – see its picture above.

मेरा राजा यहॉ आ रहा है। सो तुम्हारे राजा को उन सब चीतों को जो मेरे राजा के साथ तुम्हारे टापू पर उसके साथ आयेंगे खाने के लिये काफी जानवर देने होंगे।"

यह सुन कर वह छोटा हिरन बहुत डर गया। उसने सोचा — "चीते तो बिल्ली होते हैं और बिल्ली चूहे खाती है। बड़ी बिल्ली, जैसे चीता, बड़े जानवर खाता है जैसे हिरन और छोटा हिरन।" और छोटा हिरन नहीं चाहता था कि उसको कोई खाये।

उसको यह भी मालूम था कि वह चीते से लड़ने के लिये बहुत छोटा था सो वह अपने दोस्त साही[26] के घर दौड़ा गया। वहॉ जा कर वह उससे बोला — "मेरे दोस्त, मुझे तुमसे एक काम है। तुम मुझे अपना एक सबसे लम्बा और सबसे मजबूत कॉटा दे दो।"

"पर तुम्हें उसकी क्या जरूरत पड़ गयी? मेरे कॉटे तो बहुत लम्बे हैं सख्त है और तेज़ हैं। उससे तो तुम अपने आपको ही चोट मार लोगे।" साही बोला।

छोटा हिरन बोला — "मैं यह सब तुम्हें बाद में बताऊॅगा पर अभी तो सबसे जरूरी बात यह है कि अगर तुम अपना कॉटा मुझे दे दोगे तो तुम बोर्नियो के जंगल के हर जानवर की जान बचाओगे।"

[26] Translated for the word "Porcupine" – see its picture above.

साही यह सोच कर हॅसा कि ऐसा कैसे हो सकता है। उसका केवल एक कॉटा उस सारे टापू के जानवरों की जान कैसे बचा सकता है पर फिर भी उसने उसको अपना एक सबसे लम्बा, मजबूत और तेज़ कॉटा निकाल कर उस छोटे हिरन को दे दिया।

छोटे हिरन ने उसको अपने मुॅह में दबाया और जितनी जल्दी वहॉ से भाग सकता था उतनी जल्दी वहॉ से भागता हुआ उस दूत चीते के पास आया।

दूत चीते ने पूछा — "क्या हुआ? क्या तुमने अपने राजा से कहा कि हमारा राजा यहॉ बोर्नियो में आ रहा है? और क्या तुमने उसको यह भी बताया कि चीते मॉस खाते हैं और उसको उन चीतों के खाने के लिये बहुत सारे जानवर देने हैं?

और क्या तुमने उसको हमारे राजा की मूॅछ का वह बाल भी दिखाया जो मैंने तुमको दिया था ताकि वह यह जान सके कि हमारा राजा कितना बड़ा है?"

छोटे हिरन ने दूत चीते की ऑखों में ऑखें डाल कर देखा और बोला — "हमारे राजा अभी बड़े बड़े जानवरों का शिकार करने में लगे हैं इसलिये वह अभी तुम्हारे पास बात करने के लिये नहीं आ सकते।

पर उन्होंने मुझसे तुमसे यह कहने के लिये कहा है कि वह खुद भी चीते खाने के लिये बहुत भूखे हैं और वह यह उम्मीद करते है कि तुम सब लोग यहॉ जरूर आओगे ताकि वह तुम लोगों को खा

सकें। और उन्होंने तुम्हारे लिये यह भेजा है।" कह कर उसने साही का वह कॉटा उसके सामने जमीन पर रख दिया।

दूत चीते ने पूछा — "यह क्या है? यह तो बहुत लम्बा, सख्त और तेज़ है।"

छोटा हिरन बोला — "यह हमारे राजा की मूँछ का बाल है। उन्होंने यह बाल तुमको इसलिये दिया है ताकि तुम्हारे राजा को यह बाल देख कर यह अन्दाज हो जाये कि हमारे राजा कितने बड़े हैं।"

दूत चीते ने वह बाल उठाया और तुरन्त ही अपने राजा के पास भाग गया। वह बाल उठाते ही उसके पंजे में चुभ गया और उससे खून निकलने लगा। यह देख कर दूत चीता डर गया।

वहॉ जा कर वह बोला — "राजा साहब, मैं बोर्नियो से आपके लिये उनके जानवरों के राजा की मूँछ का बाल ले कर आया हूँ। यह तो मुझे आपकी मूँछ के बाल से भी ज़्यादा लम्बा, सख्त और तेज़ दिखायी पड़ रहा है। इसने तो मेरे पंजे में भी खून निकाल दिया।

बोर्नियो के जानवरों का राजा तो लगता है कि बहुत ही बड़ा है और वह चीते खाता है। उसने कहलवाया है कि वह आपको और आपके परिवार को खाने के लिये आप सबका बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहा है।"

चीतों के राजा ने साही के उस कॉटे को देखा तो वह तो वाकई में बहुत लम्बा, सख्त और तेज़ दिखायी दे रहा था। उसको देख कर तो वह बहुत डर गया।

उसने सोचा — "मैं तो बोर्नियो के जानवरों के राजा के बराबर बड़ा नहीं हूँ।"

फिर वह बोला — "अगर हम बोर्नियो गये तो वहाँ के जानवरों का राजा हम सबको खा जायेगा।" इसलिये उसने अपना बोर्नियो जाने का विचार छोड़ दिया और अपना खाना कहीं और ढूँढने का फैसला किया।

इसीलिये दुनियाँ में बहुत सारी जगह तो चीते पाये जाते हैं पर बोर्नियो में नहीं।

8 चीते के शरीर पर धारियॉ कैसे–1[27]

चीते के शरीर पर धारियॉ होती हैं। चीते के शरीर पर ये धारियॉ कहॉ से आयीं? किसकी हिम्मत हुई उसके ऊपर धारियॉ डालने की? ऐसा क्यों है की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के वियतनाम देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक पानी वाला भैंसा[28] खेत में अकेला एक हल के सहारे खड़ा हुआ था। उसने सारे दिन चावल के खेतों में हल चलाया था सो अब वह उसके सहारे खड़ा थोड़ा आराम कर रहा था।

जब वह इस तरीके से थोड़ा आराम कर रहा था तो वह कभी कभी खेत के चारों तरफ लगी घास भी खा लेता था और अपनी पीठ पर पड़ी धूप का आनन्द भी ले लेता था।

कि अचानक भैंसे को किसी चीज़ की बू आयी। वह चीते की बू थी। उसकी ऑखें बड़ी हो गयीं और उसने चारों तरफ देखा।

---

[27] How the Tiger Got Its Stripes – a folktale from Vietnam, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=92
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[28] Translated for the words “Water Buffalo”

चीते की बू हवा में बिखरी पड़ी थी। उसने अपने दुश्मन की किसी आवाज को सुनने की भी कोशिश की पर उसे कुछ सुनायी नहीं पड़ा।

और पानी वाली भैंसें तो चीते का प्रिय खाना है।

अचानक ही वह भैंसा चीते को अपने सामने खड़ा देख कर आश्चर्यचकित रह गया। क्योंकि न तो वह चीता चिल्लाया और न ही वह उसके ऊपर कूदा जैसे कि वह उसको खा जाना चाहता हो बल्कि वह तो बड़ी बहादुरी और चुपचाप से पेड़ों के पीछे से निकल कर भैंसे के सामने आ कर खड़ा हो गया।

भैंसा उसको देख कर थोड़ा घबराया पर हिम्मत से बोला — "अगर तुम कर सकते हो तो मुझ पर हमला करके तो देखो। मैं अपने सींगों से अपनी रक्षा करूँगा। और अगर तुमने मुझे खाने की कोशिश की तो तुमको उसकी बड़ी मँहगी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

चीता बड़ी नरमी से बोला — "मैं यहाँ तुमको खाने नहीं आया हूँ भैंसे भाई। मैं तो तुमसे एक सवाल पूछने आया हूँ कि ऐसा कैसे होता है कि तुम्हारे जितना बड़ा ताकतवर जानवर इस हल से बँध कर इतनी कड़ी मेहनत करता है? तुम उस आदमी के लिये क्यों काम करते हो जो तुमको इस तरह बाँध कर तुमसे काम लेता है?"

वह असल में उस किसान के बारे में बात कर रहा था जिसका वह भैंसा था।

भैंसा बोला — "मुझे नहीं मालूम। पर वह आदमी मुझ पर और खेत के दूसरे कई जानवरों पर राज करता है। उसका कहना है कि यह उसकी अक्लमन्दी का कमाल है जो उसको हम सबके ऊपर राज करने के लायक बनाती है। वैसे वह सचमुच में बहुत ही अक्लमन्द आदमी है।"

चीता बोला — "अगर मेरे पास उसकी जैसी अक्लमन्दी होती तो मैं भी सारे जानवरों पर राज करता। मैं उन सबको बिल्कुल शान्त खड़ा कर देता और फिर जिसको मेरा मन करता उसी को एक एक करके खाता रहता।"

यह सुन कर भैंसा तो यह सोच कर ही डर के मारे काँप गया कि अगर चीते के पास आदमी जैसी अक्लमन्दी होती तो वह तो न जाने क्या करता।

चीता फिर बोला — "मैं आदमी के पास जाता हूँ और उससे कहता हूँ कि वह मुझे अपनी अक्लमन्दी दे दे। अगर वह मुझे अपनी अक्लमन्दी नहीं देगा तो मैं उसी को खा जाऊँगा।"

उधर उस आदमी ने अपने हथियार तो अपने घर पर ही छोड़ दिये थे और वह वापस अपने खेत की तरफ लौट रहा था कि उसको चीता दिखायी दिया।

चीते को देख कर वह डर गया पर उसने अपना डर दिखाया नहीं। उसने चीते से पूछा — "तुम्हें मुझसे क्या चाहिये, ओ जंगल के राजा? क्या तुम मुझे खाना चाहते हो?"

चीता बोला — "अगर तुम मुझे अपनी अक्लमन्दी मुझे दे दो तो मैं तुमको छोड़ दूँगा।"

आदमी बोला — "मिस्टर चीते, मुझे बहुत अफसोस है कि मैं अपनी अक्लमन्दी घर पर ही छोड़ आया हूँ। मैं उसको घर जा कर ला सकता हूँ अगर तुमको बहुत जल्दी न हो तो.... ।

पर मुझे एक और बात का डर है कि जब मैं अपनी अक्ल लेने के लिये घर जाऊँगा तो तुमको भूख लग आयेगी और तुम मेरे भैंसे को खा लोगे। और मुझे उसकी अपना हल खींचने के लिये बहुत जरूरत है।

सो अगर तुम मुझे इजाज़त दो तो मैं तुमको यहाँ एक रस्सी से एक पेड़ के साथ बाँध जाऊँ। इससे मुझे विश्वास रहेगा कि तुम मेरे भैंसे को नहीं खाओगे। इससे मैं अपने आपको भी सुरक्षित महसूस करूँगा और घर जा कर अपनी अक्ल शान्ति से ला सकूँगा।"

चीता राजी हो गया सो आदमी ने रस्सी का एक फन्दा उसके गले में डाल कर उसको एक पेड़ से बाँध दिया और वह खुद अक्ल लाने के लिये घर दौड़ गया।

जब वह वापस लौटा तो उसके साथ एक गाड़ी भूसा था और एक जलती हुई मशाल थी। आदमी बोला — "यह रही मेरी अक्ल।"

कह कर उस आदमी ने वह भूसा चीते के चारों तरफ इतनी दूर फैला दिया जिससे कि वह उसे अपने पंजों से न छू सके और फिर उसने उस भूसे में आग लगा दी।

वह फिर बोला — "जब यहॉ मेरा काम खत्म हो जायेगा तो तुम मुझसे भी ज़्यादा अक्लमन्द हो जाओगे।"

जलते हुए भूसे की गरमी ने चीते को झुलसा दिया। सारे समय वह दर्द के मारे चिल्लाता रहा जब तक कि आग ने उसकी रस्सी को जला नहीं दिया। जैसे ही रस्सी जली चीता उस पेड़ से छूट कर वहॉ से भाग लिया।

भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि वह उस आग से जल कर मरा नहीं पर आग की लपटों और उसके धुँए ने उसके शरीर पर काली धारियॉ बना दी थीं।

आज भी ये धारियॉ उसके शरीर पर देखने को मिलती हैं। उसके बाद उसने आदमी से कभी अक्ल लेने की कोशिश नहीं की।

9 चीते के शरीर पर धारिया कैसे–2[29]

चीते के शरीर पर धारियॉ कैसे पड़ीं इसकी एक और लोक कथा। यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये दक्षिण अमेरिका के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली है। पढ़ो और देखो कि वहॉ के लोग इस बारे में क्या कहते हैं।

यह बहुत समय पहले की बात है तब चीते[30] के शरीर पर धारियॉ नहीं हुआ करती थीं और खरगोश के भी तब बहुत लम्बी सुन्दर पूँछ थी।

एक चीते का एक खेत था। उसके खेत में बहुत सारी घास फूस उग आयी थी सो उसको एक ऐसे मजदूर की जरूरत थी जो उसके खेत की घास फूस निकाल सकता ताकि वह अपने खेत को नया बीज बोने के लिये ठीक कर सके।

सो एक दिन चीते ने जंगल के सब जानवरों को बुलाया और जब वे आ गये तो उनसे कहा — "मुझे एक मजदूर की तुरन्त जरूरत है जो मेरे खेत की घास फूस झाड़ियॉ आदि साफ कर दे।

---

[29] How the Tiger Got His Stripes – a folktale from Brazil, South America.
Taken from the Web Site :
http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_8.html
These tales appear in a Book : "Fairy Tales From Brazil: How and Why Tales from Brazilian Folklore", by Elsie Spicer Eells. Chicago, Dodd, Mead and Company, Inc. 1917. 18 Tales. This book is given at the above Web Site.

[30] Translated for the word "Tiger" – see its picture above.

तुममें से जो कोई भी मेरा यह काम करेगा मैं उसको एक बैल दूँगा।"

सबसे पहले बन्दर आगे आया और उसने कहा कि वह उसका यह काम कर देगा। चीते ने उसको कुछ समय के लिये रख कर देखा पर वह कोई बहुत अच्छा मजदूर साबित नहीं हुआ। उसने काम जम कर नहीं किया सो वह कुछ भी पूरा नहीं कर सका।

उसके बाद बकरा आया। बकरे ने बड़ी वफादारी से काम किया पर यह काम करने के लिये उसके दिमाग नहीं था। वह खेत का थोड़ा सा हिस्सा इधर करता पर फिर वह खेत के दूसरे हिस्से की तरफ भाग जाता। उसने कुछ भी काम सफाई से खत्म नहीं किया। सो चीते ने उसको बिना कुछ दिये ही निकाल दिया।

इसके बाद अरमाडिलो आया। वह बहुत ताकतवर था। उसने काम तो बहुत अच्छा किया पर उसकी समस्या क्या थी कि उसकी भूख बहुत ज़्यादा थी।

चीते के खेत में चींटियॉ बहुत थीं और अरमाडिलो किसी मुलायम मीठी रसीली चींटी को खाये बिना आगे बढ़ ही नहीं सकता था। इस तरह से सारा दिन वह खाता ही रहता। चीते ने उसको भी बिना कुछ दिये ही वापस भेज दिया।

आखीर में खरगोश आया और बोला कि चीते जी आपका यह काम मैं करूँगा।

चीता उसको देख कर हॅसा और बोला — "अरे तुम यह काम करोगे? बन्दर, बकरा, अरमाडिलो तो मेरा यह काम कर नहीं सके फिर तुम इसे कैसे कर पाओगे?"

अब क्योंकि इस काम के लिये और कोई आगे नहीं आया तो चीते ने फिर उसे ही रख लिया और कहा कि पहले वह उसे कुछ समय के लिये देखेगा कि वह कैसा काम करता है।

खरगोश ने बड़ी वफादारी से काम किया और एक ही दिन में उसके खेत का काफी हिस्सा साफ कर दिया। दूसरे दिन भी उसने ठीक से काम किया।

चीते को लगा कि वह तो बड़ा खुशकिस्मत है कि उसको खरगोश जैसा मजदूर मिल गया। उधर उसने यह भी भॉप लिया कि खरगोश उसकी देखभाल के बिना भी काम कर सकता था।

वह खरगोश को काम करते देखते देखते थक गया था सो अब उसने शिकार पर जाने का विचार किया। उसने अपने बेटे को खरगोश पर निगाह रखने के लिये वहॉ छोड़ दिया।

जब चीता वहॉ से चला गया तो खरगोश ने चीते के बेटे से कहा — "वह बैल जिसे तुम्हारे पिता ने मुझे देने के लिये कहा है उसके बॉये और दॉये दोनों कानों पर एक एक सफेद धब्बा है। है न?"

चीते का बेटा बोला — "ओह नहीं तो। वह बैल तो सारा का सारा लाल रंग का है। बस एक बहुत ही छोटा सा सफेद रंग का धब्बा उसके दॉये कान पर है।"

खरगोश फिर कुछ देर तक काम करता रहा। कुछ देर बाद वह फिर बोला — "वह बैल जिसे तुम्हारे पिता ने मुझे देने के लिये कहा है वह बैल नदी के पास है। है न?"

चीते का बेटा बोला — "हॉ है तो।"

तब तक खरगोश ने उस बैल को बिना काम खत्म किये ही लेने का एक प्लान बना लिया था। पर तभी उसने देखा कि चीता तो वापस लौट रहा था।

चीते ने देखा कि उसकी गैरहाजिरी में उस दिन खरगोश ने काम ठीक से नहीं किया था सो वह फिर खरगोश को देखता ही रहा जब तक उसका सारा खेत साफ नहीं हो गया। उसके बाद चीते ने जैसा कि उसने उससे वायदा किया था उसका बैल उसको दे दिया।

खरगोश ने बैल लिया और वहॉ से चला गया पर कुछ दूर जाने के बाद उसने सोचा कि वह उसे मार दिया जाये।

तभी कुछ दूरी पर उसने एक मुर्गा बोलते हुए सुना जिससे उसे लगा कि पास में ही वहॉ एक और खेत होगा। तो फिर तो वहॉ पर चींटियॉ भी होंगी इसलिये अभी मैं बैल को मार कर क्या करूॅगा।

वह और आगे बढ़ा तो उसने फिर सोचा कि वह उस बैल को मार देगा। पर वहॉ की जमीन उसको गीली और नम लग रही थी

और साथ में वहॉ उगी हुई झाड़ियों पर लगी पत्तियॉ भी।

सो खरगोश को लगा कि वहॉ मच्छर तो होंगे ही तो फिर अभी मैं बैल को मार कर क्या करूँगा।

वह फिर आगे बढ़ा तो वह एक ऊँची सी जगह आ गया। वहॉ बड़ी तेज़ ठंडी हवा बह रही थी। उस जगह को देख कर वह बोला — "अरे यहॉ तो कोई मच्छर नहीं हैं। और यह जगह तो बस्ती से भी इतनी दूर है कि यहॉ तो मक्खियॉ भी नहीं हैं।"

सो उसने फिर बैल को मारने का इरादा कर ही लिया और बैल को मार दिया। जैसे ही वह बैल को खाने वाला था कि वहॉ एक चीता आ गया।

चीता बोला — "खरगोश, तुम तो हमेशा से ही मेरे बहुत अच्छे दोस्त रहे हो। मुझे बहुत भूख लगी है कि मेरी तो सारी हडिडयॉ ही हड्डियॉ दिखायी दे रही हैं। तुमको भी दिखायी दे रही होंगी। क्या तुम मेरे ऊपर इतनी मेहरबानी करोगे कि इस बैल का एक टुकड़ा मुझे भी खाने के लिये दे दो।"

खरगोश ने चीते को बैल का एक टुकड़ा दे दिया। चीते ने उसे पलक झपकते ही खा लिया। फिर वह कुछ पीछे की तरफ बैठते हुए बोला — "क्या तुम मुझे खाने के लिये बस इतना सा ही बैल और दोगे?"

खरगोश को चीता इतना बड़ा, जंगली और भयानक लग रहा था कि वह उसे और बैल देने से मना नहीं कर सका। चीता भी बैल

खाता गया खाता गया खाता गया जब तक कि उसने खरगोश का सारा बैल खत्म नहीं कर लिया।

खरगोश बेचारे को तो बस एक छोटा सा कौर ही मिल सका। वह चीते पर बहुत गुस्सा था।

एक दो दिन के बाद खरगोश एक ऐसी जगह गया जो चीते के घर के पास ही थी। वहॉ जा कर उसने पेड़ों के बड़े बड़े टुकड़े काटने शुरू कर दिये।

यह देख कर चीता वहॉ आ गया और उससे पूछा कि वह वहॉ क्या कर रहा था। खरगोश बोला — "मैं अपने चारों तरफ लकड़ी का खॉचा बनाना चाहता हूॅ। क्या तुमने राजा का हुकुम नहीं सुना?"

चीता बोला — "नहीं मैंने तो ऐसा कुछ नहीं सुना।"

खरगोश बोला — "अरे यह तो बड़ी अजीब बात है कि राजा का यह हुकुम तुमने नहीं सुना। यह हुकुम तो चारों तरफ फैल गया है कि जंगल के हर जानवर को सुरक्षित रहने के लिये अपने चॉरों तरफ एक खॉचा बनवा लेना चाहिये। और सारे जानवर ऐसा कर रहे हैं।"

यह सुन कर चीते को तो चिन्ता हो गयी। "हे भगवान अब मैं क्या करूॅ? मुझे तो यह खॉचा बनाना आता नहीं। और मैं तो इसे बना भी नहीं सकता।

ओ अच्छे खरगोश, ओ मेहरबान खरगोश। तुम तो हमेशा से ही मेरे बहुत अच्छे दोस्त रहे हो। क्या तुम हमारी दोस्ती की खातिर मेरा यह काम नहीं करोगे? इससे पहले कि तुम अपने चारों तरफ अपने लिये खॉचा बनाओ मेरे चारों तरफ एक खॉचा बना दो।"

खरगोश बोला — "मैं तुम्हारे लिये पहले खॉचा बना कर अपनी ज़िन्दगी खतरे में नहीं डाल सकता।"

पर फिर चीते के बहुत पीछे पड़ने पर बाद में वह राजी हो गया।

सो खरगोश ने बहुत सारी लकड़ी काटीं और फिर उनको लम्बी नुकीली डंडियों की शक्ल दे कर उन डंडियों को चीते के चारों तरफ गाड़ दिया। फिर उसने चीते के ऊपर भी कुछ डंडियॉ बॉध दीं जिससे चीता उस खॉचे के अन्दर बन्द हो गया।

यह करके खरगोश चीते को वहीं छोड़ कर चला गया।

चीता वहॉ खड़ा खड़ा बहुत देर तक यही देखने के लिये इन्तजार करता रहा कि शायद कुछ घटना ऐसी हो जिससे उसको यह पता चले कि इस खॉचे की क्या जरूरत थी। पर वहॉ तो कुछ भी नहीं हुआ।

काफी देर खड़े रहने के बाद उसको भूख और प्यास लग आयी। वह बेचारा सहायता के लिये इधर उधर देख रहा था कि कुछ ही देर में वहॉ से एक बन्दर गुजरा तो उसने उससे पूछा — "बन्दर भाई क्या खतरा गुजर गया?"

बन्दर की समझ में कुछ नहीं आया कि चीता किस खतरे की बात कर रहा था पर फिर भी वह बोला "हॉ गुजर गया।"

यह सुन कर चीता बोला — "बन्दर भाई, ओ प्यारे बन्दर भाई। क्या तुम इस खॉचे में से बाहर निकलने में मेरी सहायता करोगे?"

बन्दर इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहता था सो बोला — "जिसने तुम्हें इस खॉचे में बन्द किया है वही तुम्हें निकालेगा।" और यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

कुछ देर बाद वहॉ बकरा आया तो चीते ने उससे भी पूछा — "बकरे भाई क्या खतरा गुजर गया?"

बकरे की समझ में भी यह बात नहीं आयी कि चीता किस खतरे की बात कर रहा था पर फिर भी वह भी बोला "हॉ गुजर गया।"

यह सुन कर चीता बोला — "बकरे भाई, ओ प्यारे बकरे भाई। क्या तुम इस खॉचे में से बाहर निकलने में मेरी सहायता करोगे?"

बकरा भी इस पचड़े में नहीं पडना चाहता था सो बोला — "जिसने तुम्हें इस खॉचे में बन्द किया है वही तुम्हें निकालेगा।" और यह कह कर वह भी वहॉ से चला गया।

उसके जाने के बाद वहॉ अरमाडिलो आया। चीते ने उससे भी खतरे के बारे में पूछा पर वह भी किसी खतरे के बारे में नहीं जानता

था फिर भी उसने जवाब दिया कि हॉ अब वहॉ कोई खतरा नहीं है।

चीते ने उससे भी सहायता मॉगी पर वह भी यही कह कर चला गया कि "जिसने तुम्हें इस खॉचे में बन्द किया है वही तुम्हें निकालेगा।"

जब किसी ने उसको उस खॉचे में से बाहर नहीं निकाला तो वह उस खॉचे में से बाहर निकलने के लिये उसके अन्दर ही अन्दर कूदने लगा। पर खरगोश उसको इतना मजबूत लगा कर गया था कि वह उसको तोड़ ही नहीं सका।

उसको लग रहा था कि वह उस खॉचे को कभी तोड़ ही नहीं सकेगा। कूदते कूदते वह काफी थक गया था सो वह सुस्ताने के लिये बैठ गया।

जब वह सुस्ता रहा था तो उसको लगा कि सूरज उस दिन कितना चमकीला चमक रहा था। उस दिन जंगल में शिकार करना कितना अच्छा रहता। नदी का पानी भी कितना ठंडा होता।

सो यह सोच कर वह एक बार फिर से उस खॉचे के पीछे की तरफ अपनी पूरी ताकत से कूदा और लो वह खॉचा तो टूट गया पर उन नुकीली डंडियों से उसके शरीर के दोनों तरफ लम्बे लम्बे जख्म आ गये।

और उन जख्मों की वे धारियॉ उसके शरीर पर आज तक मौजूद हैं।

10 चीते को पंजे कैसे मिले[31]

नाइजीरिया के रहने वाले यह बताते हैं कि चीते को पंजे कैसे मिले।

यह बहुत पुरानी बात है तब की जबकि दुनियॉ शुरू ही हुई थी। उन दिनों केवल एक ही तरह के जानवर हुआ करते थे किसान जानवर।

उनका राजा चीता होता था उसको सब जानवर प्यार करते थे। वह बहुत ताकतवर था पर बहुत दयालु और अक्लमन्द था। उस समय जानवर लोगों के पास न तो तेज़ दॉत या तेज़ पंजे हुआ करते थे न उन्हें उनकी जरूरत हुआ करती थी।

इनमें बस एक कुत्ता अलग जानवर था। इसके दॉत बहुत तेज़ होते थे और यह एक बहुत ही बदसूरत जानवर माना जाता था। दूसरे जानवर इसकी हॅसी उड़ाते थे।

एक बार जानवरों ने सोचा कि वह सब मिल कर गॉव में एक बड़ा कमरा बनायेंगे जहॉ वे अपने अपने खेतों में काम करने के बाद कुछ आराम कर सकें। इस कमरे से बारिश के मौसम में भी बचाव हो सकेगा।

बतख जिसे भीगने में कोई परेशानी नहीं थी और उधर कुत्ता जो गुफा में रहता था दोनों ने इस कमरे को बनाने में हिस्सा लेने से

[31] How the Leopard Got His Claws – a folktale from Nigeria, Africa. By Chinua Achebe
Taken from the Web Site : https://www.jstor.org/stable/2784520?seq=1#page_scan_tab_contents
From the Journal "Journal of Black Studies", 1990. Sage Publications.

मना कर दिया और इस कमरे के बन जाने के बाद इसको इस्तेमाल करने से भी मना कर दिया।

एक दिन बहुत ज़ोर की बारिश पड़ी। उस समय कुत्ता अपनी गुफा से बाहर था तो वह बारिश से बचने के लिये गॉव में बने कमरे की तरफ भागा ओर कमरे में गुस गया।

जानवरों ने उसको वहॉ से निकालने की बहुत कोशिश की पर जब वे उसको उस कमरे में से न निकाल सके तो वे बेचारे सहायता के लिये राजा चीते के पास पहुॅचे।

अब कुत्ते के तो तेज़ नुकीले दॉत थे तो उनकी वजह से उसने न केवल चीते को हरा दिया बल्कि उसको राजा की गद्दी से भी हटा दिया। अपनी हार से और अपनी प्रजा की कायरता से चीता बहुत शरमिन्दा हो गया जिन्होंने फिर कुत्ते को अपना राजा बना लिया था। उसके बाद से वह कुत्ते से बदला लेने का प्लान बनाने लगा।

पहले वह एक लोहार के पास गया जिसने उसके बहुत ही भयानक लोहे के दॉत और मारने वाले तॉबे के पंजे बना दिये। इस के बाद फिर वह बिजली की कड़क के पास गया जिसने उसको बहुत भयानक गरजती हुई आवाज दी।

इन चीज़ों को ले कर वह फिर जानवरों के गॉव में लौटा। वहॉ आ कर उसने बड़ी आसानी से कुत्ते को हराया जानवरों में अपना डर फैलाया गॉव के जानवरों को खाया और जानवरों को जंगल भेजा। हर जानवर अपने अपने रास्ते चला गया।

और इस तरह से जानवरों का आदमियों को खाना शुरू हुआ।

यह कहानी यह भी बताती है कि कुत्ता एक घरेलू जानवर कैसे बना। चीते के भयानक गुस्से से बचने के लिये कुत्ता एक शिकारी के पास उसकी शरण में भागता है और इस शरण के बदले में उसका दास और गाइड बनने का वायदा करता है।

किसी भी दिन जब तुम मॉस के लिये भूखे होगे तो मैं तुम्हें जंगल में रास्ता दिखाऊँगा। वहॉ हम साथ साथ शिकार करेंगे और मेरे साथी जानवरों को मारेंगे।

11 टोड की खाल खुरदरी कैसे हुई[32]

ऐसा क्यों है की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली है। यह कथा बताती है कि टोड[33] की ऊपरी खाल खुरदरी क्यों है।

यह बहुत समय पहले की बात है तब टोड की खाल आज जैसी नहीं होती थी बल्कि बहुत चिकनी हुआ करती थी। उन दिनों उसको बाहर घूमने में बहुत अच्छा लगता था सो वह कभी अपने घर में ही नहीं मिलता था।

अगर किसी के घर पार्टी होती तो वह वहॉ जरूर होता चाहे फिर वह जगह उसके घर से कितनी भी दूर क्यों न होती और चाहे उसको वहॉ पहुॅचने में कितना भी समय क्यों न लगता।

---

[32] How the Toad Got His Bruises – a folktale from Brazil, South America.
Taken from the Web Site :
http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_7.html
These tales appear in a Book : “Fairy Tales From Brazil: How and Why Tales from Brazilian Folklore”, by Elsie Spicer Eells. Chicago, Dodd, Mead and Company, Inc. 1917. 18 Tales. This book is given at the above Web Site

[33] There are two different animals – frogs and toads. Frogs usually have moist smooth slimy shiny skin and long stripy legs and are likely to be found in damp habitats in the garden. While toads have dry bumpy warty skin, golden eyes and prefer to crawl rather than hop. If threatened a toad can puff itself up to appear bigger. Toads can tolerate drier habitats than frogs and spend less time in water. Frog eggs are found in a mass while toad eggs are more in a chain. To differentiate toad from frog we shall use “Toad” word here throughout.

एक दिन उसको आसमान से एक पार्टी का बुलावा मिला तो उसके दोस्त अरमाडिलो[34] ने उससे कहा — "तुम वहॉ कभी नहीं पहुँच सकते। क्या तुम्हें मालूम है कि तुम जमीन पर भी कितना धीरे चलते हो?"

टोड बोला — "तुम देखना कि मैं उस पार्टी में जाता हूँ या नहीं।"

टोड के घर के पास ही एक बड़ा सा काला चिड़ा रहता था। कोई उस चिड़े को पसन्द नहीं करता था। जंगल की सारी चिड़ियॉ और जानवर सभी उसको नफरत करते थे।

एक दिन टोड उसके घर गया और उससे पूछा — "दोस्त चिड़े, क्या तुम आसमान में होने वाली पार्टी में जा रहे हो?"

चिड़ा बोला — "हॉ हॉ मैं जाने की सोचता तो हूँ।"

टोड बोला — "यह तो बहुत अच्छा है। क्या मैं तुम्हारे साथ वहॉ चल सकता हूँ?"

चिड़ा बोला — "ठीक है चलो।"

चिड़े को अच्छा लगा कि कोई उसके साथ जायेगा। यह उसके लिये एक नया ही अनुभव रहेगा। सो चिड़ा बोला — "मुझे तुम्हारे साथ पार्टी में जाने में बहुत अच्छा लगेगा। बोलो हम कब चलें?"

[34] Armadillo – an animal – see its picture above

टोड बोला — "हम लोग चार बजे चलेंगे। तुम मेरे घर आ जाना हम लोग वहीं से चलेंगे।"

"ठीक है।

टोड फिर बोला — "और हॉ अपनी वायलिन[35] साथ में ले चलने की याद रखना।"

चिड़ा ठीक चार बजे टोड के घर पहुँच गया। उसके पास उसकी वायलिन भी थी क्योंकि टोड ने उससे उसको अपने साथ ले चलने के लिये कहा था।

टोड बोला — "मैं अभी चलने के लिये तैयार नहीं हूँ। तुम अपनी वायलिन दरवाजे के बाहर रख दो और अन्दर आ जाओ। मुझे ज़रा टौयलेट जाना है मैं अभी एक मिनट में आता हूँ।"

सो उस चिड़े ने बड़ी सावधानी से अपनी वायलिन दरवाजे के पास रखी और टोड के घर में अन्दर आ गया। जैसे ही चिड़ा टोड के घर में अन्दर आया टोड अपनी खिड़की से बाहर कूद कर उसके वायलिन में घुस गया।

चिड़ा उसका वहीं बैठा बैठा इन्तजार करता रहा कि कब टोड अपनी टौयलेट से वापस आये तो वे पार्टी में चलें पर टोड का तो कहीं कुछ पता ही नहीं था।

आखिर वह वहॉ इन्तजार करते करते थक गया तो उसने अपनी वायलिन उठायी और चल दिया। जब वह पार्टी में पहुँचा तो

[35] Violin is a string musical instrument – see its picture above.

उसे काफी देर हो गयी थी। पर वहॉ उसने उनको बताया कि किस तरह उसको टोड का इन्तजार करने में देर हो गयी थी।

उसके मेजबान बोले — "एक टोड के लिये तो एक मिनट भी इन्तजार करना बहुत बड़ी बेवकूफी है। एक टोड आसमान में हो रही पार्टी में कैसे आ सकता है।

हमने तो उसको हॅसी में बुलाया था क्योंकि वह हर जगह घूमता रहता है। पर कोई बात नहीं। अब चलो तुम अपनी वायलिन यहॉ रख दो और आओ दावत में आओ।"

चिड़े ने अपनी वायलिन रख दी और दावत खाने चला गया। टोड ने जब देखा कि आस पास में कोई भी नहीं है तो वह वायलिन में से बाहर कूद गया। बाहर निकल कर वह तो बहुत खुश हो गया।

उसने कहा "अच्छा तो वे यह सोच रहे थे कि मैं पार्टी में नहीं आऊॅगा। यह क्या मजाक है। वे लोग मुझे यहॉ देख कर कितने आश्चर्यचकित होंगे।"

दावत की जगह कोई और इतना खुश नहीं था जितना कि टोड। जैसे ही चिड़े ने उसको वहॉ देखा तो पूछा कि वह वहॉ कैसे आया तो टोड बोला कि वह उसको यह बात किसी और दिन बतायेगा। और वह खाने और नाचने लगा।

चिड़े का समय वहॉ कुछ बहुत अच्छा नहीं गुजरा सो उसने सोचा कि वह वहॉ से जल्दी ही चला जायेगा। वह वहॉ से अपने

मेजबान को बिना नमस्ते किये ही चला गया। वह अपनी वायलिन भी वहीं छोड़ गया।

जब पार्टी खत्म हो गयी तो टोड फिर से चिड़े की वायलिन में घुस कर बैठ गया और उसमे बैठा बैठा उस समय का इन्तजार करता रहा जब चिड़ा अपनी वायलिन को नीचे अपने घर ले जायेगा।

टोड को वहॉ बैठे बैठे बहुत देर हो गयी कोई उस वायलिन को उठाने नहीं आया तो टोड को चिन्ता हुई। उसको उस समय लगा कि शायद उसको वहॉ नहीं आना चाहिये था।

कुछ समय बाद एक चील ने उस वायलिन को देखा तो वह बोला — "अरे यह वायलिन तो चिड़े की है। लगता है वह चिड़ा इसे यहीं भूल गया है मैं इसको ले जाता हूॅ और ले जा कर उसके दे दूॅगा।

सो चील ने वह वायलिन उठायी और उसके ले कर नीचे उड़ गया। टोड उसके अन्दर बैठा था सो वह उसके अन्दर बैठा बैठा बहुत ज़ोर ज़ोर से हिल रहा था। इस तरह से हिलते हिलते वह बहुत थक गया।

उधर चील भी उस वायलिन को ले कर उड़ते उड़ते थक गया। वह बोला — "उफ़ अब मैं चिड़े की इस पुरानी वायलिन को और आगे नहीं ले जा सकता इसको यहॉ तक लाना भी मेरी बेवकूफी थी। वह चिड़ा मेरा कोई दोस्त थोड़े ही है।"

सो उसने वायलिन वहीं छोड़ दी। वायलिन नीचे गिर पड़ी। वह टूट गयी। टोड उसमें से बाहर निकल कर पत्थरों पर गिर पड़ा। ओ पत्थरों मेरे रास्ते से हटो।"

पर पत्थर तो सुनते नहीं सो वे उसके रास्ते से हटे नहीं। वे वही पड़े रहे।

जब टोड वायलिन में से बाहर निकला तो उसके सारे शरीर पर चोटें लगी हुई थीं। वायलिन में हिलते हिलते उसके सारे शरीर पर चोटें लग गयीं थीं। वह बड़ी मुश्किल से अपने घर तक पहुँच सका।

चिड़े को कभी पता ही नहीं चल सका कि उसके वायलिन का क्या हुआ और टोड देखने में इतना बुरा क्यों हो गया। तबसे वह आज तक ऐसा ही है। उसके शरीर के वे चोट के निशान गये नहीं। और अब वह पहले की तरह से बाहर भी घूमने भी नहीं जाता।

12 पेड़ों की पत्तियॉ क्यों गिरती हैं[36]

बच्चों तुमने देखा होगा कि जब बारिश का मौसम खत्म हो जाता है और जाड़ा आने को होता है तो बहुत सारे पेड़ों की पत्तियॉ पीली पड़ने लगती हैं फिर गिर जाती हैं और फिर हवा में उड़ जाती हैं। इसको हम लोग पतझड़ का मौसम कहते हैं।

उसके बाद जब वसन्त आता है और थोड़ा गरम होने लगता है तो फिर उन पेड़ों की शाखों में कल्ले फूटने लगते हैं और नयी पत्तियॉ आनी शुरू हो जाती हैं।

क्या कभी तुमने सोचा है कि ऐसा क्यों होता है। तो लो पढ़ो यह कहानी कि ऐसा क्यों होता है। उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के आदिवासियों का कहना है कि यह उनके ऊपर भगवान का शाप है इसी लिये ऐसा होता है। उनका कहना है कि —

यह बहुत पहले की बात है जब पेड़ और जानवर भी आपस में बात किया करते थे। वे सब एक साथ रहते थे और आपस में एक दूसरे से बहुत सारी चीज़ें बॉट कर इस्तेमाल करते थे।

अब जाड़ा तो हर साल ही आता था सो चिड़ियें तो अपने परिवार के साथ दक्षिण में गरमी की जगह की तरफ उड़ जाती थीं

[36] Why the Trees Lose Their Leaves – a Cherokee folktale from Native Americans, North America. Adapted from the Web Site :
http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/WhyTheTreesLoseTheirLeaves-Cherokee.html

और फिर वसन्त में ही वापस लौटती थीं जब इधर थोड़ा गरम हो जाता था।

एक साल जब जाड़ा शुरू हुआ तो एक घरेलू चिड़ा[37] घायल हो गया। उसको लगा कि वह अकेले गरम देशों में पहुँचने के लिये इतनी दूर की यात्रा नहीं कर पायेगा।

सो उसने अपने परिवार को अपने बिना ही गरम देश में जाने के लिये भेज दिया। क्योंकि वह घायल था इससे उसको लगा कि वह शायद वह वह जाड़ा भी ज़िन्दा न रह सके। सो उसने पेड़ों से सहायता माँगी।

पहले वह ओक के पेड़ के पास गया — "ओक भाई, मैं बहुत घायल हूँ और उड़ नहीं सकता। जाड़ा आ रहा है और अगर उससे पहले मुझे कहीं रहने का ठिकाना नहीं मिला तो यकीनन मैं मर जाऊँगा।

मेहरबानी करके तुम मुझे मेरी इस तकलीफ के समय में अपनी पत्तियों और शाखों में रहने की जगह दे दो। ताकि मैं ठीक हो सकूँ और जब मेरा परिवार यहाँ लौटे तो मैं उससे मिल सकूँ।"

पर ओक का पेड़ एक पुराना सख्त पेड़ था और जाड़े के मौसम में किसी मेहमान को अपने पास रखने के मूड में नहीं था सो वह उस चिड़े से बोला — "ओ चिड़े, तुम यह जाड़ा बिताने के लिये किसी

[37] Translated for the word "Sparrow" – see its picture above.

और के पास जाओ। मैं नहीं चाहता कि तुम यह जाड़ा मेरे साथ बिताओ।"

यह सुन कर घायल चिड़े को बहुत दुख हुआ पर यह सुन कर वह वहॉ से चला गया।

अब वह एक मैपिल के पेड़[38] के पास गया और बोला — "ओ मैपिल के पेड़, मैं बहुत घायल हूॅ और अपने परिवार के साथ गरम जगहों पर जाने के लिये उड़ नहीं सकता। मेहरबानी करके मुझे अपनी पत्तियों और शाखों में इस जाड़े में रहने के लिये जगह दे दो वरना मैं मर जाऊॅगा।"

हालॉकि मैपिल का पेड़ एक बहुत ही दयालु स्वभाव का पेड़ था पर फिर भी उसने उस चिड़े को अपने ऊपर रहने के लिये मना कर दिया। उसने कहा — "तुम किसी और से जा कर शरण मॉगो। मैं नहीं चाहता कि यह जाड़ा तुम मेरे साथ बिताओ।"

और एक बार फिर से वह चिड़ा दुखी हो कर वहॉ से चला गया। चिड़ा जंगल में लगे बहुत सारे पेड़ों के पास उस जाड़े में शरण मॉगने गया पर हर पेड़ ने उसको शरण देने से मना कर दिया।

[38] Maple Tree is a very common tree in far North of the United States of America area and the whole of Canada. It gives beautiful colors in Fall season. People go to see its colors every year. It is the national tree of Canada and its leaf is on the Canadian flag. Its sap is called Maple juice which is used for several purposes including eating with pancakes.

बस अब केवल एक ही पेड़ रह गया था पाइन का। जब सारे पेड़ों ने चिड़े को शरण देने से मना कर दिया तो उसकी आशा टूट गयी। उसको लगा कि वह तो इस जाड़े में बस अब मर ही जायेगा। फिर भी वह एक छोटी सी आशा के साथ पाइन के पेड़ के पास चल दिया।

वह जा कर उससे बोला — "ओ पाइन के पेड़, मैं बहुत घायल हो गया हूँ और अपने परिवार के साथ दक्षिण के गरम देशों की तरफ उड़ कर जाने के लायक नहीं हूँ। अगर मुझे जाड़ा आने से पहले ठहरने की कोई जगह नहीं मिली तो मैं यकीनन मर जाऊँगा।

मेहरबानी करके क्या तुम मुझे इस जाड़े के मौसम में अपनी पत्तियों और शाखों मे रहने की थोड़ी सी जगह दोगे।"

पाइन ने सोचा "मैं तो बहुत ही छोटा पेड़ हूँ मैं क्या करूँ।" पर उसका दिल चिड़े के दुख से रो पड़ा।

वह बोला — "ओ चिड़े। जैसा कि तुम देख रहे हो मेरे पेड़ की पत्तियाँ तो बहुत पतली सी हैं बल्कि सुई जैसी हैं। यहाँ तक कि मेरी शाखें भी दूसरे पेड़ों की शाखों की तरह से बहुत ज़्यादा और घनी नहीं हैं।

फिर भी जो कुछ मेरे पास है उसको मैं तुम्हारे साथ मिल बाँट कर इस्तेमाल करने के लिये तैयार हूँ। आओ मेरे घर में तुम्हारा स्वागत है।"

और इस तरह चिड़ा उस पाइन के पेड़ पर बसेरा कर गया और उसने अपना सारा जाड़ा वहीं उस पाइन के पेड़ के ऊपर बिताया।

जब वसन्त का गरम मौसम आ गया तो उसका परिवार भी गरम जगहों से लौट आया। वह खुद भी ठीक हो गया था सो वह अपने परिवार से मिलने के लिये दौड़ गया।

दुनियॉ बनाने वाले ने यह सब सुना और देखा जो चिड़े और पेड़ों के बीच हुआ।

उसने उस जंगल के पेड़ों को बुलाया और उनसे कहा — "तुम सबको इतना सब कुछ दिया गया और तुम्हारे पास इतना सब कुछ था और तुम उसमें से उस घायल चिड़े के साथ ज़रा सा भी नहीं बॉट सके? इस वजह से आज के बाद से जब भी धरती पर जाड़ा आयेगा तुम्हारी सब पत्तियॉ झड़ जायेंगी मर जायेंगीं और उड़ जायेंगीं।"

फिर दुनियॉ बनाने वाले ने पाइन के पेड़ से कहा — "ओ पाइन के पेड़, तुम्हारे पास तो इन सब पेड़ों से सबसे कम था फिर भी तुमने चिड़े को इतना दिया कि तुम्हारे उस काम ने मेरा दिल छू लिया।

अगली बार से जब भी धरती पर जाड़ा आयेगा तो इन सारे पेड़ों में केवल तुम्हारी ही पत्तियॉ जाड़े भर रहेंगी और हरी रहेंगी। यह तुम्हारे उस काम का इनाम है जो तुमने मुझे इस चिड़े को शरण दे कर मुझे दिया है।"

और इसी वजह से उस दिन से आज तक जब भी धरती पर जाड़ा आता है तो सारे पेड़ों की पत्तियॉ गिर जाती हैं मर जाती है और उड़ जाती हैं, सिवाय पाइन[39] के पेड़ के।

इस लोक कथा से हमें एक सीख यह भी मिलती है कि जो कुछ भी हमारे पास हो, चाहे थोड़ा हो या बहुत, हमको आपस में बॉट कर ही इस्तेमाल करना चाहिये। खास करके जब जबकि दूसरा आदमी परेशान हो या तंगी में हो या उसकी जान पर बनी हो।

भगवान सब देखता है और अगर हमारा काम अच्छा है तो हमें उस अच्छे काम का अच्छा फल जरूर मिलता है।

[39] Although Pine tree may be very tall but it does not have the leaves like other normal trees. Its leaves are like needles. Thus it is not good for making nests or shade etc. It has several species. One of its very common species with its fruit has been shown above.

13 कीड़े धरती के नीचे ही क्यों रहते हैं[40]

बच्चों अगर तुमने ध्यान दिया हो तो बहुत सारे कीड़े मकोड़े धरती के नीचे ही रहते हैं। ऐसा कैसे हुआ। अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश के लोगों का कहना है कि —

जब नाइजीरिया के कैलेबार प्रदेश में ईयो 3[41] सारे आदमियों और जानवरों पर राज करता था तो उसके पास मीटिंग के लिये एक बहुत बड़ी इमारत थी। उसी इमारत में वह अपनी जनता को दावत भी देता था।

यह वहाँ का रिवाज था कि जब दावत खत्म हो जाती और लोग टोम्बो[42] भी खूब सारी पी लेते उसके बाद ही लोग वहाँ स्पीच देना शुरू करते थे।

एक दिन दावत के बाद एक चींटा उठा और बोला कि वह और उसके साथी सब लागों से ज़्यादा ताकतवर थे और कोई भी जानवर यहाँ तक कि हाथी भी उसके मुकाबले में खड़ा नहीं हो सकता था। उस दिन वह

---

[40] Why the Worms Live Underneath the Ground? (Tale No 13) – a folktale of Southern Nigeria, West Africa.
Adapted from the book : "Folktales From Southern Nigeria" by Elphinstone Dayrell. 1910. Contains 40 stories.
This book is available at: http://www.worldoftales.com/Nigerian_folktales.html

[41] Eyo 3 ruled in Calabar city of Nigeria in its Cross River State

[42] Tombo is a kind of alcoholic drink used by Nigerians

कीड़ों के बारे में खास तौर पर कुछ जरा ज़्यादा ही बुरा बोल रहा था।

चींटे की इस बात पर कीड़े बहुत गुस्सा हुए और उन्होंने राजा से शिकायत की। राजा बोला कि इस बात को तय करने का कि सबसे ताकतवर कौन है सबसे अच्छा तरीका यही है कि दोनों सड़क पर मिलें और वहॉ लड़ कर यह तय करें कि सबसे ज़्यादा ताकतवर कौन है।

इस लड़ाई के लिये उसने दावत से तीसरा दिन तय कर दिया और सारे लोग इस लड़ाई को देखने के लिये उस दिन वहॉ इकट्ठा हो गये।

सारे चींटे सुबह सुबह जैसा कि उनका अपना तरीका था करोड़ों की गिनती में अपने अपने बिलों से बाहर निकले और करीब 1 इंच चौड़ी लाइन बना कर चल दिये। ऐसा लग रहा था जैसे कोई 1 इंच की पट्टी पूरे राज्य में से हो कर जा रही हो। सबसे आगे उनके गार्ड चल रहे थे।

जब वे लोग लड़ाई के मैदान में आये तो चारों तरफ बिखर गये। अब चींटे तो करोड़ों मे दिखायी दे रहे थे और कीड़े मकोड़े केवल थोड़े से ही दिखायी दे रहे थे।

यह लड़ाई केवल कुछ मिनट ही चली क्योंकि सारे चींटों ने मिल कर उन थोड़े से कीड़ों मकोड़ों को अपने तेज़ दॉतों से काट काट

कर टुकड़ों में फेंक दिया। उनमें से भी जो कुछ थोड़े बहुत बच गये थे उन्होंने धरती के नीचे छिप कर अपनी जान बचायी।

इस तरह राजा ईयो ने चींटों को विजयी घोषित कर दिया।

तबसे कीड़े मकोड़े तो धरती के नीचे ही रहते हैं और अगर वे कभी बारिश के बाद धरती से बाहर आते भी हैं तो कोई भी चीज़ उनके पास आये तो वे डर कर फिर धरती के नीचे चले जाते हैं। उसके बाद से अब वे केवल चींटों से ही नहीं बल्कि धरती के ऊपर की हर चीज़ से डरते हैं।

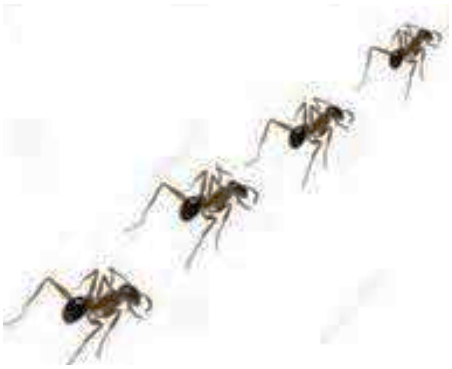

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**